हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अप्रैल, 2010 वर्ष 09 अंक 2

सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12/=
वार्षिक	रु0 120/=
विशेष वार्षिक	रु0 500/=
विदेशों में (वार्षिक)	30 यू०एस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Vision Computers - 9838644687

बेग़ैरती की बात

आश्चर्य की बात है कि मुसलमानों के लिये अल्लाह पाक के कलाम और उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अहादीस में दारैन (दुन्या व आख़िरत) की सफलता तथा उन्नति के ज्ञान के ख़ज़ाने भरे हुए हैं फिर भी वह हर बात में दूसरों पर निगाह रखते हैं और दूसरों का झूठा खाने के पीछे लगे रहते हैं, क्या यह चीज़ बड़ी ही बेग़ैरती और अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ अजनबीयत (अपरिचय) तथा दूरी की नहीं है? क्या इस की मिसाल उस बीमार की नहीं है जिस के घर एक निपुण चिकित्सक विद्यमान हो और वह किसी अनाडी वैद्य से दवा ले।

(शैख़ुलहदीस मौ० मु० ज़करीया रह०)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
बर्रे सगीर के मुसलमानों का हाल	डा0 हारून रशीद सिद्दीकी	6
जग नायक	मौ0 (स0) म0 राबे हसनी	8
इस्लामी अखलाक	मौ0 स0 अब्दुल्लाह हसनी	11
आप के प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मु0 ज़फर आलम नदवी	12
मुस्लिम समाज	मौ0 राबे हसनी	14
हम कैसे पढ़ायें	डा0 सलामतुल्लाह	17
हजरत अली रज़ि0 की अपने बेटों को वसीयत	इदारा	19
व्यवहारिक जीवन में रौशनी के मीनार	एम0 हसन अंसारी	21
एकता का अनुरोध	सिक्रेट्री दावत व इर्शद विभाग	22
अपनी नियत का किबला ठीक कीजिये	मौ० मु० राबे हसनी नदवी	25
तबलीगी जमाअत	इदारा	28
अकीदा	शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी	29
मदरसा बोर्ड हमारे	एम0 हसन अंसारी	30
हैवानी गिज़ाएं	इदारा	32
तेरा बसेरा है कहां?	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	34
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	35
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुरआन की शिक्षा

– मौ० शब्बीर अह़मद उस्मानी

सूरतुलबक़र :

तर्जमा : शुरूअ़ अल्लाह के नाम से जो बेहद मेहरबान, निहायत रहम वाला (बड़ा दयालू महा कृपालू[1]) है।

"अलिफ़ लाम मीम" (1) इस किताब में कोई शक नहीं,[2] राह बतलाती है।[3] डरने वालो को[4] (2) जो यक़ीन करते हैं बे देखी चीजों का[5] और काइम रखते हैं नमाज़ को[6] और जो हम ने रोज़ी दी है उन को उस में से खर्च करते हैं[7] (3) और वह लोग जो ईमान लाए इस पर कि जो कुछ नाज़िल हुआ तेरी तरफ और इस पर कि जो कुछ नाज़िल हुआ तुझ से पहले और आखिरत को वह यक़ानी जानते हैं[8] (4)

तफसीरी नोट्स : 1– इन हुरूफ़ को "मक़त्तआ़त" कहते हैं, इनके असली मअ़ना (अर्थ) अल्लाह ही को मअ़लूम हैं, यह अल्लाह व रसूल के बीच भेद है जिसे अल्लाह ने दूसरों पर जाहिर नहीं फ़रमाया। कुछ आलिमों ने इनके मअ़ना लिखे हैं यह उन की शख़सी राए है।

2– अर्थात इस किताब के अल्लाह के कलाम होने में और इस के मजामीन (बातों) के सच होने में केई शक नहीं। जानना चाहिये कि किसी कलाम (बात) में शक होने की दो शकलें हैं। या तो खुद उस कलाम में कोई ग़लती और ख़राबी हो या सुनने वाले की समझ में कोई ख़राबी हो। पहली सूरत में इस कलाम में शक किया जा सकता था तो इस आयत में पहली बात का जवाब बताया बेशक यह अल्लाह का कलाम है चाहे किसी को अपनी ना समझी से शक हो पस अगर काफिर लोगों ने इस में शक किया और इस का इन्कार किया तो यह उन्होंने अपनी ना समझी से शक किया और इन्कार किया। हक़ीक़त में इस में कोई शक नहीं कि यह अल्लाह का कलाम है। रही दूसरी सूरत कि इस के मजामीन (बातों) में शक हो तो इस को आगे आयत 23 में चैलेंज कर के कहा है कि अगर तुम को इस में शक है तो इस जैसी कोई सूरत बना लाओ।

3– बन्दे ने सूर–ए–फातिहा में कहा था बतला हम को राह सीधी। यहाँ से आखिर क़ुर्आन तक बन्दों को उस भाग का जवाब दिया गया है अर्थात सीधी राह बतलाई गई है।

4– अर्थात जो बन्दे अपने खुदा से डरते हैं उन को यह किताब रास्ता बतलाती है इस लिये कि जो खुदा से डरेगा उस को इस की जरूर फिक्र होगी कि खुदा किस बात से राज़ी होता है और किस बात से नाराज़ होता है और जिस को खुदा का डर ही नहीं उस को फ़रमाँबरदारी और ना फ़रमानी की क्या फिक्र?

5– अर्थात जो चीज़ें उन की अ़क्ल व समझ से छुपी हुई हैं (जैसे दोज़ख, जन्नत, फ़िरिशते वग़ैरह) उन सब को अल्लाह व रसूल के बताने से हक़ और यक़ीनी समझते हैं। इस से मअ़लूम हुआ कि इन गैबी (परोक्षकी) बातों को न मानने वाला हिदायत (सत्य मार्ग) से महरूम (वंचित) है।

6– इक़ामते सलात (नमाज़ क़ाइम रखने) का यह मतलब है कि हमेशा वक़्त की पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं। इसमें ज़माअत से नमाज़ अदा करना भी है।

7– ताअतों (आज्ञापालन) की तीन अस्ल (मौलिक नियम) हैं दिल से तअ़ल्लुक़ रखने वाली बातें, बदन से तअ़ल्लुक़ रखने वाली बातें, माल से तअ़ल्लुक रखने वाली बातें, इस आयत में तीनों उसूलों (मौलिक नियमों) को तर्तीब वार (क्रमशः) ले लिया गया है।

8– इस से पहली आयत में मक्के के उन मुशरिको का बयान था जो ईमान लाए थे, इस आयत में उन का बयान है जो अहले किताब (अर्थात यहूदी और ईसाई) में से इस्लाम में दाखिल हुए।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अनुवाद : अताउल्लाह सिद्दीकी

अमतुल्लाह तस्नीम

सिर्का की तारीफ

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने घर वालों से सालन माँगा उन्होंने कहा हमारे पास इस वक़्त सिर्का के सिवा कुछ नहीं है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर्का मंगवा लिया और उस को खाते जाते थे और फ़रमाते जाते थे सिर्का कितना अच्छा सालन है, सिर्का खूब सालन है।

रोज़ः की हालत में दअ़वत दी जाए तो क्या करना चाहिए

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अगर तुम में से किसी को दअ़वत दी जाय तो कुबूल करो अगर रोज़ः हो तो उस के हक में दुआ करो और अगर रोज़ः ना हो तो खालो। (मुस्लिम)

दअ़वत में जाते वक़्त बे बुलाए आदमी के साथ हो जाने पर हुज़ूर (सल्ल0) का मेज़बान से इजाज़त लेना

हज़रत अबू मसऊद (रज़ि0) से रिवायत है कि एक शख्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दअ़वत की आप के लिए खाना तय्यार किया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिला कर पाँच आदमी थे। जब आप तशरीफ ले जाने लगे तो एक आदमी और भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हो गया। जब आप मेज़बान के दरवाजे पर पहुँचे तो आप ने मेज़बान से फ़रमाया यह शख्स मेरे साथ हो गए हैं, तुम्हारी खुशी हो तो इन को रोक लो, वरना यह वापस हो जाए। उन्होंने अर्ज किया या रसूलुअल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं इन को भी इजाज़त देता हूँ। (बुखारी, मुस्लिम)

बच्चे को खाने की तअ़लीम

हज़रत उमर (रज़ि0) बिन अबू सलमह से रिवायत है कि मैं छोटा था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में था मैं प्लेटों में इधर–उधर हाथ डाल कर खाया करता था, आप ने मुझ से फ़रमाया ऐ लड़के अल्लाह का नाम लेकर सीधे हाथ से खा और अपने आगे से खा। (बुखारी, मुस्लिम)

हुज़ूर (सल्ल0) के हुक्म की तअ़मील न करने का नतीजा

हज़रत सलमह (रज़ि0) बिन अकूअ से रिवायत है कि एक आदमी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने बाएं हाथ से खाना खा रहा था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया सीधे हाथ से खाओ, वह बोला मैं सीधे हाथ से नहीं खा सकता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमया न खा सको, बस फिर वह कभी अपने मुंह की तरफ़ दायां हाथ न उठा सका (यह बात उस के गुरूर ने कहलायी थी) (मुस्लिम)

खाना खाकर आसूदह होना

हज़रत वहशी बिन हरब से रिवायत है कि असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आप से अर्ज किया या रसूलुल्लाह हम खाना खाते हैं और सेर नहीं होते, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया शायद तुम लोग अलग–अलग खाते हो, लोगों ने अर्ज़ किया हाँ या रसूलुल्लाह आप ने फ़रमाया मिल कर खाओ और बिसमिल्लाह कह कर शुरूअ करो तो उस में बरकत होगी। (अबूदाऊद)

बीच से मत खाओ

हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि0) से रिवायेत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया खाने के बीच में बरकत उतरती है तो खाना हर तरफ से खाओ बीच से मत खाओ।

(अबूदाऊद, तिर्मिजी)

खाना नोश फ़रमाते वक़्त हुज़ूर (सल्ल0) की नशिस्त

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि0) बिन बसर (रज़ि0) से रिवायत है कि

शेष पृष्ठ 10

बर्रे सग़ीर के मुसलमानों का हाल

डॉ० हारून रशीद सिद्दीक़ी

बर्रे सग़ीर (उप महा द्वीप) हिन्द, पाक, बंगाला देश में मुसलमानों की भारी संख्या बस्ती है। यूँ तो अ़रब देश में भी गोत्र (क़बाइल) हैं परन्तु सय्यिद, शैख, मुग़ल, पठान, सिद्दीक़ी, फारूक़ी, उस्मानी, अ़लवी, अन्सारी, मंसूरी, जोलाहा, तेली, नाई, धोबी, मनिहार, दरज़ी आदि वहां नहीं हैं। इन में से कुछ ने तो अपने को इस्लामिक महापुरुषों के नाम से सम्बन्धित किया और उन के कुल (खान्दान) से होने का दअ़वा किया और अपने को दूसरे मुसलमानों के मुकाबले में ऊँचा समझा। अधिकाँश की जातें उन के व्यवसाय से जुड़ गईं। ऐसा लगता है भारत में मुस्लिम शासन काल में पुरस्कारों (इनआ़मात) के लालच में इन कौमों ने अपने को अपने व्यवसाय (पेशा) से पुकारे जाने ही में लाभ देखा और इसी को अच्छा समझा। जैसा कि आज भी देखा जा रहा है कि कई कौमें अपने को पबलिक का परजा बताती और शादी विवाह में कुछ सेवाएं (खिदमात) कर के पुरस्कार की माँग करती और पुरस्कृति की जाती हैं।

मैं एक शादी समारोह (तक़रीब) में शिरकत के लिये गया मुझे एक पलंग पर जगह दी गई, इतने में एक बड़े मियाँ पूरी दाढ़ी वाले लोटे में पानी और छोटी लगन लेकर पहुँचे और मुझ से कहा पैर उतारिये मैं आप के पैर धोऊँगा मैं ने कहा मैं अपने पैर खुद धोता हूँ किसी दूसरे से नहीं धुलाता। कहने लगे मेरा हक़ मारा जाए गा। मैं ने उन को कुछ पैसे देकर उन से छुटकारा लिया। गौर किया तो समझ में आया कि आज पचासों रसमें सिर्फ हक़ के लिये राइज हैं।

शुरूअ में तो इन व्योसायिक जातियों ने अपने लाभ के लिये व्यवसाय के नाम से पुकारे जाने को अच्छा जाना लेकिन कुछ समय बीतने पर वह अपने को पबलिक का सेवक समझते हुए आत्महीनता (एहसासे कमतरी) के शिकार हो गये जिस का बड़ा सबब यहाँ का माहौल भी था कि यहाँ शूद्र तथा दूसरी सेवक जातियाँ पहले से मौजूद थीं वरना इस्लाम में कुलानुसार (खान्दानी लिहाज़ से) ऊँच नीच की कल्पना नहीं है। यहाँ तो जो जितना संयमी है वह ईश्वर के निकट उतना ही ऊँचा है। बड़े खेद की बात यह है कि ऐसी जातियों ने सभ्यता में भी अपने को गिरा लिया। उन का उठना, बैठना, रहन–सहन दूसरी कौमों से भिन्न हो गया। आज मुसलमानों में जातों का भेद भाव बड़े खेद की बात है।

यह मिल्लत एक बात में आज भी मुमताज़ है वह यह कि अगर एक शख्स शरीअ़त के इल्म में महारत रखता है और शरीअ़त का पाबन्द है तो वह वक़्त का मुफ्ती बन सकता है, शैख़ुल ह़दीस और शैख़ुत्तफ़्सीर हो सकता है वह जुमे का ख़तीब व इमाम हो सकता है कोई सय्यिद उस के पीछे नमाज़ पढ़ने में कोई संकोच नहीं कर सकता अतः मुसलमानों में ना बराबरी को दूर करने की बड़ी अच्छी तदबीर दीन के इल्म का ह़ासिल करना, हाफ़िज़ आ़लिम बनना है, साथ ही अपनी सक़ाफ़त (सभ्यता) को ऊँचा करना है। सभ्यता की बुलन्दी माल व दौलत से नहीं इस्लाम में जो जितने अच्छे स्वभाव का है वह उतना ही सभ्य है अच्छे आचरण वाला निर्धन बुरे आचरण वाले धनवान से सभ्य है।

जिस प्रकार बर्रे सग़ीर के मुसलमान जात–पात में बंट गये हैं वैसे ही वह धार्मिक दृष्टि से भी बटे हुए हैं। पहले तो यह केवल शीआ सुन्नी में विभाजित थे, फिर सुन्नियों में पाँच ग्रूप बन गये ह़नफ़ी, मालिकी, शाफ़ई, ह़ंबली और अहले ह़दीस, इस ग्रूपिंग के विद्वानों ने एक दूसरे को सत्य पर माना और उन को स्वीकार किया तथा पारसपारिक मत–भेद के कारणों को माना की इन की गुजाइश (स्थान) निकलती है।

परन्तु बुरा हो शैतान का कि वह बर्रे सग़ीर (उप महाद्वीप) के मुसलमानों को दो बड़े गुटों में विभाजित करने में सफल हो गया इन दोनों में एक को बरेलवी दूसरे को देवबन्दी कहते हैं।

यह सत्य किसी से छुपा नहीं है कि जब दादा आदम की ओर सज्दा करने से इबलीस ने इन्कार किया और वह ख़ुदा के दरबार से निकाला गया तो उस ने अल्लाह तआ़ला से क़ियामत तक की छूट माँगी कि वह इस काल में आदम की सन्तान को बहका कर बे राह करेगा ताकि वह जहन्नम में डाले जाएं इस प्रकार वह अपने मलऊन (धितकारिता) किये जाने का बदला आदम की सन्तान से लेगा। रब ने भी किसी मसलहत (गुप्त हिति) से उसे छूट देकर एअ़लान कर दिया कि जो शैतान के अनुसारण में जीवन बिताए गा उस को तथा शैतान को जहन्नम में डाल देगा और यह भी बता दिया कि जो मेरी बन्दगी से मुंह न मोड़ेगा और मेरा बन्दा बना रहेगा उस पर शैतान का दाँव न चलेगा।

शैतान अपने काम में लग गया उलमा भी अपने काम में लग गये। शैतान ने मुसलमानों में से कुछ को बहका कर कुछ बुज़ुर्गों की क़ब्रों को पक्की कराया फिर उस पर मुजाविर बिठाए, उस की आय की फ़िक्र की क़ब्रों को अच्छे वस्त्रों से सजाया, क़ब्रों पर चढ़ावे चढ़वाए, क़ब्रों को सजदे करवाए साहिबे क़ब्र से हाजतों और ज़रूरतों का सुवाल करवाया, यह सब वह कार्य थे जो इस्लाम की शिक्षाएं लाने वाले अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं बताई थी, अपितु अल्लाह के अतिरिक्त को सजदा करने से रोका था इ़स को शिर्क तथा अवैध बताया था, दीन में नई बात लाने को पथ भ्रष्ठता बताया था।

कुछ यहीं नहीं शैतान ने मुसलमानों को नमाज़, रोजा, ज़कात और हज से तो दूर कर दिया और दीन में बहुत सी नई बातें दाख़िल कर दीं जैसे किसी के इन्तिक़ाल पर तीजा चालीस्वाँ, बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर उ़र्स आदि हालांकि अल्लाह के रसूल के सह़ाबा में इन बातों का कहीं ज़िक्र नहीं मिलता। इन बातों को देख कर कुछ विद्वान (उलमा) उठे और इन का विरोध किया, बहुत से लोगों ने इन नई बातें को छोड़ा मगर बुरा हो शैतान का उस ने कुछ उलमा उठाए जिन्हों ने मुसलमानों से यह कहना शुरूअ किया कि दीन में नई बातें दो प्रकार की होती हैं अच्छी और बुरी, अतः नई बातें यदि अच्छी है तो उन को अपनाया जा सकता है उन्होंने यह न सोचा कि सभी अच्छी बातें अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी द्वारा उम्मत को पहुँचा दीं। इस प्रकार उलमा के दो ग्रूप हो गये एक दीन में नई बातों के समर्थक जो बरेलवी कहे जाते हैं दूसरे दीन में नई बातों के विरोधक जो देवबन्दी कहलाते है हालांकि यह देवबन्दी व बरेलवी बर्रे सग़ीर से बाहर कहीं नहीं जाने जाते।

बात यहीं तक नहीं रही बल्कि बरेलवी उलमा ने दीन के इन नई बातों से ध्यान हटाने के लिये देवबन्दी उलमा पर मआ़ज़ल्लाह अल्लाह के रसूल की तौहीन का आरोप लगा कर मुसलमानों को उन से दूर करने की कोशिश की लेकिन देवबन्दी कहे जोन वाले मदरसों से हर साल हजारों हजार उलमा फारिग़ होकर दीन की सेवा में लगते हैं। क्या अच्छा होता कि यह देवबन्दी बरेलवी मत–भेद समाप्त होता और सभी उलमा एक जुट हो कर दीन की खिदमत करते।

आपसी मेल न होने के सबब

कई ऐसी बुराइयां दोनों ग्रूप के अ़वाम में राइज हैं जैसे जहेज़ दोनों ग्रूप के धनवानों में राइज (प्रचलित) हैं। उलमा लोग इस ख़याल से कि वह हमारे ग्रूप में बना रहे न तो सख़्ती से रोक पाते हैं न बाइकाट कर पाते हैं। अभी रुदौली के एक प्रसिद्ध बरेलवी आ़लिम अब्दुल मुस्तफा ने पहली बार इश्तिहार छाप कर बटवाया कि तअ़ज़ियादारी नाज़इज़ है, बेशक उन की किताबों में ऐसा ही लिखा है मगर कभी उन्होंने अपनी तकरीरों में तअ़ज़िया–दारी का ज़िक्र न किया उन का यह इश्तिहार पहली बार छपा और बंटा लेकिन किसी एक शख़्स ने भी तअ़ज़ियादारी न छोड़ी जब कि सुन्नियों में जो भी तअ़ज़ियादार हैं वह बरेलवी हैं। यह नुकसानात आपसी मेल न होने ही के सबब हैं। अल्लाह हिदायात दे। आमीन!

❑❑

किस्त : 16

जगनायक

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी

अनुवाद मु० गुफ़रान नदवी

वालिदह की वफ़ात और दादा की तवज्जुह और सरपरस्ती

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदह जो अपने यतीम बच्चे को अपनी हददर्जे क़ीमती पूंजी समझती थीं, और बच्चा भी बाप के न होने पर माँ से मानूस (हिला हुवा) रहता था, बच्चे को लेकर मदीना बच्चे के दादा की नानहीयाल गई, शायद वहाँ से बच्चे को देखने के लिये बुलाया गया होगा, कई महीने रहकर वापस हो रही थीं, कि मक्का मदीना की बीच की बसती "अबवा" में बीमार पड़ीं और इन्तिक़ाल कर गईं उनके साथ एक खातून (महिला) उम्मे ऐमन थीं जो एक तरह बच्चे की खिलाई भी थीं, बच्चे की देख–भाल में मददगार थीं, आप की वालिदा माजिदा की तदफ़ीन वहीं हुई, और अब आप उम्मे ऐमन के साथ मक्का वापस आए, आपकी उम्र उस वक़्त छः साल की थी, और अब वालिद और वालिदह दोनों की सरपरस्ती नहीं रही।[1]

दादा की वफ़ात

अब मरदों में आपके दादा थे जिन्होंने शफ़क़त (ममता) बढ़ा दी और ध्यान रखा, वह मक्के के बड़े सरदार थे, लेकिन दो साल बअ़द उनका इन्तिक़ाल हो गया, फिर उनकी जगह चचा अबू तालिब ने संभाली, आप उस वक़्त आठ साल के हुवे थे।

इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश और नशो नुमा (विकास व उन्नति) मक्के के उस बाइज़्ज़त खानदान के ऐसे फ़र्द की हैसित से हुई जो पैदाइश से पहले ही अपने वालिद से महरूम (वंचित) हो गया था और छः साल की उम्र को पहुँचने पर वालिदह के साया से भी महरूम हो गया, और आठ साल के हुवे थे कि मेहरबान व शफ़ीक़ दादा ने भी जुदाई का दाग़ दिया, शुरू उम्र में इन दो नुकसानों का होना कम उमरी के ज़माने में बड़ा चेलंज रखते थे।[2]

चचा अबू तालिब की तवज्जुह और ज़िम्मेदारी

दादा के इन्तिक़ाल के बअ़द आप अपने उन चचा की सरपरस्ती में रहे जिन का तिजारती कारोबार था, इस सिलसिले में उनका वतन से दूर जाना हुवा करता था, और मक्के के निवासियों का यही व्यापारी कारोबार था, आपकी उम्र बारह साल की रही होगी कि चचा तिजारत के लिये शाम जाने लगे तो आपने उनके चले जाने से तनहाई के एहसास से अपने लिये भी इसरार किया, कि साथ चलेंगे, आप के इसरार (अनुरोध) पर आपको बावजूद कम उम्र होने के साथ ले लिया, चुनांचि आपने शाम का तिजारती सफ़र भी किया और तिजारत के अन्दाज़ व तरीक़े को भी देखा और उसको समझा भी होगा, जैसा कि बअ़द में हज़रत खदीजा के कहने पर आपने तिजौरती सफ़र को कुबूल करके अपनी जानकारी दिखा दी।[3]

उस ज़माने के हालात पर नज़र डालने से यह ख़ास बात सामने आती है कि प्रॉरभिक शारीरिक उन्नति और विकास की अवस्था (उम्र) में माँ और बाप दोनों की सरपरस्ती न होने पर और माली हालात के मुवाफ़िक़ न होने पर परेशान न होना और बेसहारा जैसी कैफ़ियत से गुज़रने के बावजूद बेचैन न होना बल्कि सब्र, बरदाश्त (सहन) अपने ऊपर भरोसा, हिम्मत, हौसला, सच्चाई, दियानतदारी, ऊँचा हौसला जैसी अच्छाइयों का पैदा होना एक अजीब और शानदार बात ज़ाहिर (प्रकट) होती है जो आप को हासिल हुई, और आप हालात के मुवाफिक न होने के बावजूद ऐसे किरदार (आचरण) और शखसियत (व्यक्तित्व) के मालिक बने जिनको देख कर लोग आपके बारे में ऊँचा खियाल रखने लगे।

चुनांचि आप नबवूत का मन्सब मिलने से पहले चालीस साल की उम्र तक मक्के के बाशिन्दों (निवासियों)

1. इब्नुल असीरफी उसुदिल गावह : 1/15

2. तबकात इब्न सअ़द : 1/118–119

3. तबकात इब्न सअ़द : 1/118–119

में एक निहायत शरीफ़ाना, अच्छे अख़लाक़ और ऊँची इनसानी क़दरों वाले इनसान की शकल में देखे गए और उनके वतन वाले, रिश्तेदार, उनसे उनही ऊँची सिफ़ात की वज़ह से मुहब्बत करते और "सादिक़" व "अमीन" के ख़िताबात से नवाज़ते थे, कि सच्चा इनसान, दियानतदार इनसान, आप अपने वतन वालों और ख़ानदान के लोगों के साथ हर अच्छे काम में शरीक़ और मददगार और ग़लत कामों में अपने को अलग रखने वाले थे।

आपका पालन पोषण और शिक्षा–दीक्षा

सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की "बेसत" अनगिनत नबीयों की अनगिनत क़ौमों में "बेसत" और नबूवत का काम अनजाम देने के बअ़द वाक़े (घटित) हुई थी, उन क़ौमों ने नबीयों की कोशिशों के बावजूद बहुत कम उनकी बात मानी और अपनी–अपनी ख़ुवाहिशात की ज़िन्दगी को बहुत कम बदला और आख़िरत में अल्लाह तआ़ला ने छे सौ सला की मुद्दत नबीयों को भेजने से ख़ाली रखी, विद्वानों और विचारको पर मआ़मले को छोड़ा कि इनसान ख़ुद से अपने को सही दीनी व अख़लाकी रास्ते पर लाएं, लेकिन इनसानों की हालत और ज़ियादा ख़राब हो गई, और क़ाबिले नफ़रत हद तक पहुँच गई, जैसा कि हदीस शरीफ़ में इसका ज़िक्र आया है लेकिन अल्लाह तआ़ला को फिर भी रहम आया और उसने ऐसा नबी भेजने का फ़ैसला फ़रमाया जो कि ज़ियादा मुअ़स्सिर (प्रभावी) और हमागीर (सर्वव्यापी) तरीके से इनसानों के सुधार का काम करे और सिर्फ ज़िन्दगी के दीनी शोंबो (विभागों) तक काम को महदूद (सीमित) न रखे बल्कि ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं (विभागों) में अल्लाह रब्बुल आलमीन की मर्ज़ी पर चलने का मिज़ाज बनाए और तरबियत (ट्रेनिंग) दे, आप से पहले विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न क़ौमों में नबी भेजे जाते रहे, उन्होंने अपने इलाक़ों और क्षेत्रों तक अपने काम को अनजाम दिया था, उनकी कोशिशों के बअ़द भी जब–जब इस्लाह अर्थात सुधार की उम्मीद ख़त्म हो जाती और नबी को उसकी क़ौम बिल्कुल आजिज़ (विवश) कर देती बल्कि उसको मार कर ख़त्म कर देने के दरपै हो जाती तो फिर अल्लाह तआ़ला अपना ग़ज़ब अज़ाब की शकल में नाज़िल करता और उसके बिगाड़ को ख़त्म करने के लिये दुनिया को उनसे पाक कर देता।

इस्लाह व दअ़वत (सुधार और अल्लाह की ओर बुलाने) के लंबे सिलसिले के बअ़द अब छटी सदी ईसवी से जो ज़माना शुरू हो रहा था, वह इनसानों की ज़िन्दगयों में बहुत बुरे हालात पैदा हो जाने का ज़माना महसूस किया जा रहा था, दूसरी तरफ मानव जीवन, इनसानी तमुद्दुन (संस्कृति) व्यवहारिक तजुरबों और उसकी टूट–फूट के मरहले से गुज़र कर एक विश्वव्यापी जीवन व्यवस्था और शिक्षा के आम होने के ज़माने में दाख़िल होने जा रहा था, एक तरफ उसकी ज़िन्दगी अख़लाकी और दीनी हालात के लिहाज़ से बहुत ज़ियादा बिगाड़ की हद तक पहुँच गई थी, जो अल्लाह तआ़ला के बहुत ग़ज़ब और नफ़रत को खींचने का सबब बन रही थी, और उससे यह सूरत बन रही थी कि या तो इस बिगाड़ को ख़त्म करने के लिये रब्बुल इ़ज़्ज़त इस दुनिया को ख़त्म कर दे, या फिर बहुत छूट देकर सुधार का फिर मौक़ा दे दें।

इसके लिये एसे ही नबी की ज़रूरत थी जो बिखरे हुवे हालात में तरह–तरह की ज़िम्मेदरियों को संभाल सके और उसका पालन पोषण भी अच्छे ढंग से हुवा हो और उसके दिल व दिमाग की तख़्ती पर सवार्थ परता और इच्छा भक्ति की छाप न आई हो, ताकि उसके दिल व दिमाग़ की तख़्ती इनसानी तअ़लीम से सादा हो, और उसकी शिक्षा और दीक्षा का अमल आसमानी तअ़लीमात द्वारा अनजाम पाए, ताकि ज़ियादा से ज़ियादा असर करने वाली और जामे (व्यापी) नबूवत का बोझ उठाने की ज़िम्मेदारी की मज़बूत बुनयाद रखी जाए।

चुनांचि अल्लाह तआ़ला ने इसके लिये मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिख़ाब (चयन) किया और उनको बचपने ही से एसे हालात से गुज़ारा जिनसे उनमें उस मुजव्वज़ह (प्रस्तावित)

मनसब को संभालने की सलाहियत अच्छी तरह पैदा हो सके और इस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत सी ख़ुसूसियात (विशेषताओं) वाला, मुकम्मल और महान गुणों वाला नबी बना कर मबऊस फ़रमाया, और आप में उसी के अनुकूल विशेषताएं पैदा फ़रमाई, उसी के अनुसार आपका पालन पोषण और विश्वव्यापी व्यक्तित्व की रचना हुई, जिसको हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़िन्दगी में नुमायाँ (स्पष्ट) तरीक़े से देखते हैं कि आप मानव जीवन के लिये पूरा आदर्श और मार्ग दर्शक बने।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो ज़िम्मेदारी रखी गई उसमें एक तरफ़ तो व्यक्तिगत स्तर की उच्चकोटि की विशेषताएं, दूसरी तरफ ज़िन्दगी के विस्तृत क्षेत्र बल्कि विश्वस्तर की सलहियतें रखी गईं, इस में व्यक्तिगति स्तर पर आदर्श आचरण, मानव जीवन के सामूहिक तक़ाज़े शासन प्रबंध, आपस के संबन्ध, राजनीति, जीविका शास्त्र, विद्या, ज्ञान, इसके अलावा सभी मआमलात थे, और इस सबको अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक चलाने की सलाहियत भी और इस तरह दीन व शरीअ़त का जो आसमानी प्रबन्ध मुक़र्रर किया गया था उसको पूरा करना था चुंकि दीन आप पर मुकम्मल हो गया था इस लिये एसी शरीअ़त का एलामन करना था जिसमें क़ियामत तक पैदा होने वाले मसाएल व मआमलात और दुनिया के विभिन्न भागों में बसने की सूरत में अख़लाकी व समाजी ज़रूरतों को समझने और इख़्तियार करने की सूरतें, और इल्मी कोशिशों से पैदा होने वाले हालात और उनसे संबन्धित लोगों और मिज़ाजों की रिआयत रखी गई, इस तरह बहुत दूर–दर्शिता और मानव जीवन की विभिन्नता का लिहाज रखने की व्यापक और लाभदायक शरीअ़त बनी।

❑❑

हज़रत अली रज़ि0 की .....

और अदब बेहतरीन मीरास है और अच्छी आदत बेहतरीन साथी है।

इमाम हसन (रज़ि0) कहते हैं कि जब मेरे पिता का अन्तिम समय आया तो मैं बहुत परेशान हुवा। आपने कहा, क्यों हसन! तुम क्यों घबराते हो? मैंने कहा " मैं आपको इस अवस्था में देखता हुँ तो फिर क्यों न मेरी ये हालत हो? वालिद साहब ने कहा " बेटा! मेरी चार बातें सदैव याद रखना, यदि तुम उनको याद रखोगे तो उनके द्वारा हर मुसीबत से निजात मिलती रहेगी, (1) अक्ल से अच्छी कोई मालदारी नहीं। (2) अज्ञानता जैसी कोई निर्धनता नहीं। (3) स्वेच्छाचारिकता (खुद पसन्दी) से अधिक कोई भय नहीं। (4) सद्व्यवहार से अधिक मज़े की कोई चीज़ नहीं।"

(नूरूल्असार पृ 132)

❑❑

इस्लामी अख़्लाक़...

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) को कुर्आन में दयालू कहा गया है बल्कि जो आप (सल्ल0) के प्रेम में उठे–बैठे उनमें भी ये विशेषता पैदा हो गई। दया का क्षेत्र इन्सानों तक सीमित नहीं बल्कि जानवरों के साथ भी रहम का आदेश दिया गया है। अतः जानवरों के आपस में लड़ाने के मनोरंजक शौक को अवैध करार दिया गया है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने अल्लाह के रहम–करम को दर्शाने के लिये एक व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए जो अपने बेटे को अपने साथ लाया था और उसको लेटा रहा था, कहा कि क्या तुम इसपर भी दया करते हो? उसने कहा हाँ, इर्शाद हुआ कि अल्लाह तुम पर इस से ज़ियादा रहम करने वाला है जिस प्रकार तुम इस बच्चे पर दया करते हो और वह सभी रहम करने वालों से अधिक रहम करने वाला है। (अलअदबुल्मुफ़रद)

जिन नैतिक विशेषताओं की निशानदेही की गई है यदि इन विशेषताओं का कुछ भी साया इन्सान पर पड़ जाए तो इन्सान इन्सान बन जाए और वह हैवानियत तथा बर्बरियत जो वर्तमान परिवेश के मानव की विशेषता बनती जा रही है समाप्त हो जाए। अल्लाह करे कि दया, न्याय के ऐसे शीतल झोंके आएं कि मानवता की खेती लहलहा उठे। (आमीन)

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक लगन थी उस का नाम गर्रा था उस को चार आदमी उठाते थे जब आप ने चाशत की नमाज़ पढ़ ली तो वह लगन लाई गई, उस में सरीद था जब बहुत लोग जमा हो गए तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस की तरफ बढ़े और घुटनों के बल बैठ गए, एक देहाती ने कहा यह कैसी बैठक है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह ने मुझ को शरीफ बन्दा बनाया है। जब्बार, सरकश, घमण्डी नहीं बनाया. फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस के गिर्द खाओ और उस की चोटी को छोड़ दो उस में बरकत होगी। (अबूदाऊद)

हुजूर (सल्ल0) का इरशादे आली

हज़रत अबू हुजैफा (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह सल्ल–ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैं टेक लगाकर नहीं खाता। (बुखारी)

हुजूर (सल्ल0) का खजूर नोश फ़रमाना

हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा आप दोनों घुटने खड़े किए हुए और कूल्हे जमीन पर टेके हुए खजूर नोश फ़रमा रहे थे। (मुस्लिम)

तीन उंगलियों से खाने का बयान

हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब खाना खा चुको तो हाथ उस वक़्त तक न पोछो जब तक उस को चाट न लो या चटवा न लो। (बुख़ारी, मुस्लिम)

❑❑

हैवानी ग़िज़ाएं

गर्मी हो या सर्दी दोनों मौसमों में देहात के लोग इस को शौक से पीते हैं इस के बगैर उनकी ग़िज़ा अधूरी रहती है यह बदन को ग़िज़ाइयत ही नहीं देती बल्कि गर्मियों में चिलचिलाती धूप और गर्मी में बड़ा सुकून देती है।

दूध दही और छाछ का मुतवातिर इस्तेमाल सिहत को ठीक रखता है, योरोप के एक मुल्क बलगारिया के बाशिन्दों की उम्रें लम्बी होती हैं, नीज उनके जिस्म भी ज़ियादा मजबूत और तनदुरूस्त होते हैं, छान बीन करने से मालूम हुआ कि उनके तन्दुरूस्त होने और ज़ियादा उम्र पाने का सबब दही और छाछ का इस्तेमाल है।

हमारे देहातों में लोगों को दूध, दही, छाछ खूब मयस्सर है उनकी तन्दुरूस्ती और उनकी ताकते बहुत अच्छी होती हैं और उनकी उम्रें भी निसबतन ज़ियादा होती हैं।

लेकिन यह बात याद रखनी चाहिये कि छाछ ताजा इस्तेमाल करना बेहतर है, जो दही छाछ ज़ियादा खट्टे हो जाते हैं उनके फाइदों में फर्क आ जाता है।

❑❑

हम कैसे पढ़ाएं

अधिक जानकारी प्राप्त करने का शौक उनके दिल में पैदा हो जाता है जो उन्हें काम करने के लिये मजबूर करता है।

साराँश

ऊपर बताया जा चुका है कि मोटीवेशन (उत्प्रेरणा) तफरीह से भिन्न है और शिक्षण के लिये बहुत उपयोगी है। इस से समय और मेहनत दोनों की बचत होती है। उत्प्रेरणा के द्वारा बच्चों में खुशी खुशी काम करने की इच्छा पैदा होती है। सीखने की प्रक्रिया उसी समय सफल होगी जब सीखने वाले की बुद्धि जागरूक हो और वह स्वतः सीखने की कोशिश करें। बिना किसी प्रयास के टीचर के पाठ (पढ़ाने) को सुन लेना अथवा उस से मात्र मनोरंजन प्राप्त करना बच्चों के लिये बिल्कुल बेकार है। सीखने का यह बुनियादी सिद्धान्त टीचर जितनी जल्दी मन में बैठाले उतना ही अच्छा है। इस दशा में वह अपने पाठ को आसान और हर्षदायक बनाने के कृत्रिम प्रयासों से परहेज करेगा और पाठ को इस प्रकार प्रस्तुत करेगा कि वह बच्चों की मानसिक साक्रियता के सही प्रयोग का कारक हो, सिर्फ इसी प्रकार की सक्रियता (उत्प्रेरणा) बच्चों के मानसिक विकास में मदद दे सकती है।

1. **सन्दर्भ** : टीचिंग इन सेकेन्ड्री स्कूल–मुलर–अध्याय दो।
2. **सन्दर्भ** : इन्टेरेस्ट एण्ड एफर्ट इन एजूकेशन–डेबी–अध्याय तीन।

(जारी....)

❑❑

क़िस्त–तीन

इस्लामी अख़्लाक़ (नैतिकता) कुर्आन और सुन्नत की रौशनी में

– मौ० सै० अब्दुल्लाह हसनी नदवी

वीरता और सत्यकथन

बहादुरी, मर्दानगी और ताक़त कोई बुरी चीज़ नहीं, यदि उनका सहीह प्रयोग किया जाए तो दया और न्याय का तथा सत्य की सहायता और अत्याचार को मिटाने का एक प्रभावपुर्ण माध्यम बन सकता है। उन मुसलमानों की जो कठिनाइयों और मुसीबतों का दिलेरी से मुकाबला करते हैं और युद्ध में शौर्य का परिचय देते हैं की प्रसंशा अल्लाह ने की है "और जो सख्ती (कष्ट) तथा युद्ध के समय धैर्यवान (साबित क़दम) रहें वही लोग हैं जो सच्चे हुए और ड़रने वाले हैं।" (सुरः बकरः)

इसी वीरता की एक किस्म हक़गोई है जिसका प्रदर्शन उस समय अतिमहत्वपुर्ण हो जाता है जब माद्दी ताक़त के लिहाज़ से सत्य कमजोर और असत्य शक्तिशाली हो क्यों कि अत्याचार के पेशेवर शासक और बादशाह के सामने हक़गोई अत्यधिक कठिन काम है। अतः बेहतरीन जेहाद अत्याचारी शासक के समक्ष न्याय की बात कहने को करार दिया गया है। अल्लाह हम सबको हक़ एवं सत्य बात कहने का सौभाग्य दे।

सत्य निष्टा और अमानत

परस्पर लेन–देन, प्रतिज्ञा पालन और मुआमलात में जो चीज़ बुनियादी हैसियत रखती है वह अमानतदारी है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) को भी कुर्आन में अमानतदार की उपाधि दी गई है और वह अपनी सत्यनिष्ठा और अमानतदारी के आधार पर पूरे मक्के में अमानतदार के नाम से प्रसिद्ध थे। पवित्र कुर्आन में हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के बारे में कहा गया कि "मैं तुम्हारे लिये अमानदार दूत हुँ" (सूरः शअरा) प्यारे नबी ने फ़रमाया जिसमें अमानत नहीं उसमें ईमान नहीं।" (कन्जुलउम्मा) हज़रत अनस (रज़ि0) कहते हैं कि आप (सल्ल0) अपने हर भाषण (खुत्बे) में इसको जरूर फ़रमाया करते थे कि जिसमें वचन नहीं वह धार्मिक नहीं।"

(मुस्नद अहमद)

– नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

लाज–शर्म

ये इन्सान की ऐसी विशेषता है जिससे वह बहुत सी बुराईयों से बचा रहता है और बहुत सी अच्छाईयाँ उससे पैदा होती है। हदीस में है कि अल्लाह सबसे बड़ा स्वाभिमानी है इसलिये उसने दुष्कर्मों को वर्जित किया है (मुस्लिम) स्वयं हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) पर्दानशीं कुवाँरी लड़की से ज्यादा शर्मीले थे। (बुख़ारी) हज़रत आईशा (रज़ि0) जो आपकी चहेती बीवी थीं फ़रमाती हैं कि न तो आप ने मेरी शर्मगाह को देखा और न मैंने आपकी शर्मगाह को देखा। आप (सल्ल0) की ताकीद यहाँ तक थी कि तन्हाई में भी किसी मुसलमान को नंगा नहीं रहना चाहिये क्योंकि फरिश्ते हर समय साथ रहते हैं उनसे शर्म करनी चाहिये, वह केवल शौच और सहवास के समय अलग हो जाते हैं।

दया

दया मानव की ऐसी विशेषता है कि यदि कोई इससे वंचित हो तो वह इन्सान कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता बल्कि पत्थर दिल जानवरों में गिने जाने लायक है। इस्लाम ने दया को जितना सम्मान दिया है शायद ही किसी ने दिया हो। जिस विस्तार से उसकी शिक्षा दी अन्य धर्म उससे वंचित हैं। अल्लाह के विशेष नामों में अल्लाह के पश्चात जो नाम सबसे महत्वपुर्ण और आम है वह "रहमान" अर्थात बड़ा रहम करने वाला, उसके साथ दुसरा नाम "रहीम" आता है अर्थात "रहम" से भरा हुआ, प्रत्येक मुसलमान को आदेश है कि जब वह कोई अच्छा काम शुरू करें तो पहले "रहमान, रहीम" खुदा का नाम लें और इसी प्रकार कुर्आन की प्रत्येक सूरः की शुरूआत "बिस्मि–ल्लाहिर्रहीम" से ही होती है जिसका अनुवाद ये है कि "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, असीम कृपाल, महादयालू है।"

शेष पृष्ठ 9

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

मुफ़्ती मु० ज़फर आलम नदवी

प्रश्न : बर्थ डे (जन्म दिन) मनाने का इस्लाम में क्या हुक्म है?

उत्तर : यौमे मीलाद (जन्म दिन) मनाना जिस को बर्थ डे मनाना कहते हैं, यह न किताब व सुन्नत से साबित है न सहाबा और सलफे सालिहीन (पहले के संयमी पुरुषों) के अमल (कर्म) से। शरीअत ने बच्चों की पैदाइश पर सातवें दिन अक़ीक़ा रखा है जो मसनून है और जिस का मकसद नसब का पूरी तरह इज़हार और खुशी के इस मौकेअ पर अपने अजीजों, दोस्तों रिश्तेदारों और गरीबों को इस में शरीक करना है। बर्थ डे का रिवाज अस्लन मगरिबी तहज़ीब (पश्चिमी सभ्यता) की बरआमदात (निर्यात) में से है, अर्थात पश्चिम ने इसे निर्यात किया हम ने इस को स्वीकार कर लिया। वह हज़रत मसीह अलैहिस्सलमा का जन्मदिन भी मनाते है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दूसरी कौमों की मुशाबहत (उन जैसा बनने को अपनाना) से मना किया है और इसे पसन्द नहीं फरमाया है इस लिये यह जाइज नहीं। मुसलमानों को ऐसे गैर दीनी अमलों (कार्यों) से बचना चाहिये।

प्रश्न : एहतिजाज (विरोध प्रकाशन) में भूख हड़ताल करना कैसा है?

उत्तर : अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने का एक तरीका भूख हड़ताल भी है जिस में इन्सान भूखा रहकर अपने आप को नाराज जाहिर करता है और एहतिजाज करता है। जिस में कभी–कभी उस की जान तक चली जाती है। इस्लामी नुक्त–ए–नज़र (दृष्टिकोण) से यह ठीक नहीं है। ज़िन्दगी को बचाने और ताकत हासिल करने के लिये खाना खाना वाजिब (अनिवार्य) है। अलफतावा अलहिन्दीया में है : अनुवाद : खाने के चन्द दरजात (श्रेणियाँ) हैं। इतना खाना जिससे जान बाकी रहे फर्ज़ (अनिवार्य) है। लिहाजा अगर खाना पीना छोड़ दे यहाँ तक कि मर जाए तो गुनाहगार होगा। इतना कम खाना जिस से इतनी कमजोरी आजाए कि फराइज की अदाएगी में दुशवारी हो जाइज़ नहीं। अगर भूख लगे और खा सकता हो मगर न खाए यहाँ तक कि मर जाए तो गुनाहगार होगा। इस्लाम इस किस्म के गुलू और अति को नापसन्द करता है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन सहाबा को रोक दिया था जो इबादत के तौर पर लगातार रोजा रखना चाहते थे। इस्लाम ने एहतिजाज (विरोध प्रकाशन) का तरीका साफ–साफ बता दिया है जिस को कुर्आन व हदीस की इस्तिलाह (परिभाषा) में "नहीं अनिल्मुन्कर" (बुराइयों से रोकना) कहा जाता है कि इस के लिये हो सके तो ताकत से उस को रोका जाए नहीं तो पुरअम्मन तरीके पर जबान से काम लिया जाए।

प्रश्न : ऐसे रेलवे मुलाजिम (नौकर) जिन को रोजाना 100 या उससे ज़ियादा किलो मीटर तक ट्रेन पर रहना और एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता है, उस की नीयत सफर की नहीं बल्कि डयूटी पूरा करने की होती है, उस को पूरी नमाज़ पढ़ना होगी या क़स्र पढ़ना होगी?

उत्तर : रेलवे मुलाजिम (नौकर) को जब 48 मील अर्थात 78 कि0मी0 से ज़ियादा जाना हो तो वह मुसाफिर होगा और उसको चार रकआत वाली फर्ज़ नमाजों में क़स्र करना होगा अर्थात चार के स्थान पर दो रकअतें पढ़ना होंगी चाहे उस का उद्देश्य ड्यूटी देना हो, क्योंकि क़स्र का हुक्म सफर पर है न कि उद्देश्य (मक्सद) पर लिहाजा अगर सफर की दूरी पाई जाए तो क़स्र का हुक्म होगा। (रद्दुल्मुहतार, 2:600)

प्रश्न : एक शख्स ट्रेन से सफर के लिये घर से चला, लेकिन अभी स्टेशन ही पर है कि ज़ुहर का वक़्त आ गया, स्टेशन आबादी से मिला हुआ है, वह शख्स नमाज में क़स्र करेगा या पूरी पढ़ेगा?

उत्तर : सफर की नीयत से

जब शहर से बाहर हो जाए और 78 कि0मी0 या उससे ज़ियादा का सफर हो तब क़स्र का हुक्म होगा, शहर के अन्दर स्टेशन पर क़स्र नहीं कर सकते।

(रद्दुलमुहतार, 2:599)

प्रश्न : इमाम मुसाफिर है मुकतदी मुकीम हैं, इमाम ने चार रकआत वाली नमाज में क़स्र करते हुए दो रकअतों पर सलाम फेर दिया तो मुकतदी बकीया नमाज किस तरह पूरी करें?

उत्तर : अगर इमाम मुसाफिर और मुकतदी मुकीम हों तो इमाम के दो रकअतों पर सलाम फेरने पर मुकतदी खड़े हो जाएं और अपनी दोनों रकअतें पूरी करे इस प्रकार कि इन में सिर्फ सूर–ए–फातिहा पढ़ सकने के समय तक चुप चाप खड़े रहेंगे कुछ पढ़ें नहीं।

(रद्दुलमुहतार, 2:210)

प्रश्न : अगर किसी की ससराल 80 कि0मी0 से ज़ियादा दूरी पर हो और वहाँ जाने पर दो–तीन दिन या 15 दिनों से कम ठहरने का इरादा हो तो नमाज पूरी पढ़ी जाएगी या क़स्र करना पड़ेगा? ससराल वतने अस्ली के हुक्म में है या नहीं?

उत्तर : अगर कोई शख्स ससराल जाए और ससराल सफर की दूरी पर हो मगर वह वहाँ पन्दरह दिनों से कम ठहरने का इरादा रखता हो तो वह वहाँ क़स्र करेगा, क्योंकि ससराल वतने अस्ली के हुक्म में नहीं है। हाँ अगर बीवी वहीं रहती हो या शौहर ने मकान बना कर वहीं रहने का इरादा कर लिया हो तब वह वतने अस्ली हो जाएगा और नमाज पूरी पढ़ेगा। फतावा काजी खाँ और दूसरी मुसतनद फिक्ह की किताबों से यही राय राजेह मालूम होती है। (फतावा काज़ी खाँ, 1:165)

प्रश्न : एक शख्स ने ऐसी जगह का सफर किया जहाँ की दूरी के बारे में मत–भेद है कोई 78 कि0मी0 बताता है तो कोई 70 कि0मी0 कहता है ऐसी जगह में नमाज पूरी पढ़ी जाएगी या क़स्र किया जाएगा?

उत्तर : जिस जगह की दूरी में शक हो कि सफर की दूरी है या नहीं वहाँ पूरी नमाज पढ़ें "शामी" ने स्पष्ट किया है कि सफर की दूरी में शुबहा हो तो पूरी नमाज पढ़ें इसी में एहतियात है। (रद्दुलमुहतार, 2:610)

प्रश्न : अगर कोई औरत मैके जाए जब कि मैके की दूरी सफर की दूरी के बराबर हो तो वह वहाँ क़स्र करेगी या पूरी नमाज पढ़ेगी?

उत्तर : औरत के मैके के बारे में आलिमों के दो मत हैं। कुछ लोगों ने जन्म भूमि होने के सबब उसे अस्ली वतन माना है और पूरी नमाज पढ़ने का हुक्म दिया है और कुछ आलिमों ने अस्ली वतन ससराल को कहा है इस लिये वहाँ पन्दरह दिनों से कम ठहरने पर क़स्र करने को कहा है, लेकिन अल्लामा शिब्ली की राय है कि ऐसे शंक के अवसर पर एहतियात के तौर पर पूरी पढ़ना अच्छा है लिहाजा औरत अपने मैके में पूरा नमाज़ पढ़े।

प्रश्न : अगर किसी मुसाफिर ने मुकीम इमाम के पीछे क़अद–ए–अख़ीरा में शिरकत की तो अब मुसाफिर कितनी रकअतें पढ़े?

उत्तर : मुकीम इमाम के क़अद–ए–अख़ीरह में शामिल होने वाला मुसाफिर, इमाम के सलाम फेरने के पश्चात चार रकअतें नमाज पढ़ेगा। (हिदायह, 1:166)

प्रश्न : सफर में ट्रेन पर भीड़ हो और खड़े होकर नमाज पढ़ने की गुंजाइश न हो तो बैठ कर नमाज पढ़ने की इजाजत है या नहीं?

उत्तर : अगर ट्रेन में भीड़ हो और खड़े होकर नमाज पढ़ना सम्भव न हो तो ऐसी सूरत में बैठ कर नमाज अदा की जाएगी।

(रद्दुलमुहतार, 2:565)

प्रश्न : किसी की सफर की हालत में दो तीन नमाज़े छूट गईं अब वह मुकीम हो गया तो सफर वाली नमाजे पूरी पढ़ेगा या क़स्र पढ़ेगा?

उत्तर : सफर की छूटी हुई नमाजे चाहे सफर की हालत में पढ़ी जाए या कियाम की हालत में वह क़स्र पढ़ी जाएंगी। कियाम की हालत की छूटी हुई नमाजें पूरी पढ़ी जाएंगी चाहे सफर की हालत में पढ़े या कियाम की हालत में और सफर की छूटी नमाजें क़स्र से पढ़ी जाएंगी चाहे उन को सफर की हालत में अदा करें या कियाम की हालत में। (हिदायह, 1:167)

❑❑

किस्त तीन

समाज सुधार

मुस्लिम समाज इस्लामी संस्कृति

- मौ० राबे हसनी

इस्लामी संस्कृति के चार बड़े दायरे हैं :

1. दीन और अख़लाक़ का दायरा
2. सामाजिक जीवन का दायरा
3. शिक्षा के क्षेत्र
4. सौन्दर्य और शाइस्तगी (शिष्ट आचरण) का कोना

दीनी मैदान में देखा जाये तो इस्लामी संस्कृति के दायरे इबादतों और बन्दगी के कामों के सिलसिले में नजर आते हैं। ख़ूबसूरत मस्जिदों का निर्माण, मस्जिदों की सरगरमियाँ, वहाँ आना जाना, मज़हबी कामों की व्यस्तता जैसे ईदों की तैयारी, रमजान के रोज़ों के सिलसिले में तरह–तहर की तैयारी, हज और उस से सम्बन्धित कार्य, प्रवचन के आयोजनों और उन में हिस्सा लेने के मामले, धर्म प्रचार व प्रसार के सत्संग, उन की तैयारी, अल्लाह, रसूल और मुसलमानों की ख़ैरख्वाही के प्रयास, यह सब इस्लामी संस्कृति के दीनी पहलुओं से जुड़ी बातें हैं।

अख़लाक़ी एतबार से लीजिये तो पवित्र कुर्आन और हदीसों में ऐसी निर्देश और शिक्षायें बिखरी मिलती हैं कि अगर पूरी दुनिया के बुद्धिजीवी ज़मा होकर कोई ऐसा संकलन तैयार करना चाहें तो इस संकलन के समान भी लाना उन के लिए कदापि सम्भव न हो सकेगा। कुर्आन और हदीस के स्रोतों से तैयार होने वाले उत्कृष्ट आचरण और उम्दा इन्सानी किरदार के संकलन के कुछ उद्धारण निम्मवल हैं :

फ़ुजूल खर्ची (अपव्ययता) और कंजूसी दोनों से बचने का हुक्म दिया गया है। कुर्आन कहता है :

तर्जमः "और अपने हाथ को न तो गर्दन से बन्धा हुआ (अर्थात बहुत तंग) कर लो कि किसी को कुछ दो ही नहीं और न बिल्कुल ही खोल दो (कि सभी कुछ दे डालो और अंजाम यह हो) कि मलामतजदा दरमान्दा हो कर बैठ जाओ।"

(सूरः बनी इस्राईल : 29)

सच्चाई, पाकदामनी और अमानतदारी अपनाने का हुक्म दिया गया, और यह कि घमंड, खुदपसन्दी और घमंड को छोड़कर अल्लाह के लिये विनम्र बनने की शिक्षा दी गई। कुर्आन ने हज़रत लुकमान की जबानी यह निर्देश नकल किया है :

तर्जमः और घमंड में लोगों से गाल न फुलाना और जमीन पर अकड़ कर न चलना कि खुदा किसी इतराने वाले घमंडी को पसन्द नहीं करता। (सूरः लुकमान : 18)

आदम की औलाद के साथ समान व्यवहार और तमाम मुसलमानों के साथ भाईचारे का सबक दिया गया। तमाम इन्सानों के साथ समान व्यवहार का हुक्म हदीस के इन शब्दों में उल्लिखित है, "तुम सब आदम की औलाद हो, और आदम मिट्टी से पैदा किये गये थे। किसी अरबी को किसी अजमी (गैर अरब) पर, किसी काले को किसी गोरे पर और किसी गोरे को किसी काले पर कोई फ़ज़ीलत नहीं है। अलावा इस के कि तक़वा (परहेज़गारी) की बुनियाद पर कोई अफ़ज़ल (बरतर) हो।"

एक दूसरी हदीस में यूँ फरमाया गया है, "लोग आपस में ऐसे ही बराबर हैं जैसे कंघी के दनदाने।" और एक मर्तबा हज़रत अम्र बिन आस के बेटे ने एक मिस्री को यह कहते हुए मारा, 'लो एक शरीफ़ज़ादः के हाथ से', हज़रत उमर ने इस पर फ़रमाया कि, "तुमने कब से लोगों को ग़ुलाम बना रखा है, खुदा की क़सम, इन की माओं ने तो इन्हें आजाद पैदा किया था।"

माँ–बाप के साथ सदव्यवहार का हुक्म कुर्आन और हदीस में बार–बार दिया गया और इस के विपरीत करने वालों को कठोरतम धमकी दी गयी।

इसी तरह सिल–ए–रहिमी (सम्बन्धियों से सद्व्यवहार), पड़ोसियों के हक़ की अदायगी, वादा पूरा करने, रास्ते से दुखदायी चीज को दूर करने, रास्ते का हक़ अदा करने, हर जानदार पर रहम करने, यहाँ तक कि जानवरों के साथ भी

सद्व्यवहार करने का हुक्म दिया गया। हदीस में आता है कि एक व्यक्ति को परलोक में इस लिये अजाब का मजा चखना पड़ा कि उसने एक बिल्ली पर जुल्म किया था। और एक बदकार औरत इस वजह से जन्नत में दाखिल कर दी गई कि उसने प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हुक्म दिया कि पति अपनी पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार रखे, उस का हक अदा करे, पत्नी की दिलजोई करने में सवाब रखा गया, यहाँ तक कि पति यदि खैर की नीयत से पत्नी के मुंह में लुक्मः भी रखता है तो उसे परलोक में इस का बदला मिलेगा। क्या किसी धर्म में पत्नी के प्रति इस प्रकार मान व सम्मान की शिक्षा मिलती है? अल्लाह ने इस बात का भी हुक्म दिया कि पत्नी के साथ नर्मी व मेहरबानी का व्यवहार रखा जाये अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि औरत पसली से पैदा की गई है और पसली सीधी नहीं की जा सकती है। इस को (पति के मिज़ाज के अनुकूल बनाने के लिये) सीधा करना उचित नहीं। वह टूट जायेगी। औरतों के काफिले को ले चलने वाले से आप सल्ल0 ने फरमाया, नर्मी अपनाओं, यह आबगीने (काँच, शीशा) हैं। आप स्वयं अपनी पत्नियों के साथ नर्मी व अख़लाक़ का मामला फरमाते थे। हज़रत आयशा के साथ आप का ख़ास मामला रहा करता था। उन की दिलजोई के लिये उन से खेल के बारे में भी पूछते थे। एक दिन हब्शियों की नेजा बाजी (भाल चलाना) का खेल दिखलाया। आप सल्ल0 ने हुक्म फरमाया कि छोटों पर शफ़क़त (स्नेह) की जाये, बड़ों का सम्मान किया जाये, सलाम को रिवाज दिया जाये, सलाम को आपस के प्रेम को बढ़ानेवाला बताया। मुसलमानों के बीच सलाम का रिवाज इस्लामी संस्कृति की एक झाँकी है। आप सल्ल0 आपस में समान व्यवहार करने का हुक्म फरमाते थे। स्वयं जब किसी मजलिस में पधारते तो मजलिस के आखिर में जहाँ पर जगह होती बैठ जाते। आप सल्ल0 का फरमान था कि लोग आप सल्ल0 के वास्ते खड़े न हुआ करें। बुखारी शरीफ में यह हदीस है। आप ने फरमाया, 'तुम इस तरह मत खड़े हुआ करो जिस तरह अजमी खड़े होते हैं, और एक दूसरे की ताजीम करते हैं। आप सल्ल0 ने मुहाजरीन और अन्सार के बीच ऐसी बाहम बिरादरी कायम फरमाई थी जो रिश्तेदारी जैसी थी। एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान के लिये रश्ते का भाई जैसा करार दिया अैर फरमाया, 'तुम में से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिये वह पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है। मानो आप सल्ल0 ने मुसलमानों के दरमियान बाहम बिरादरी को ईमान का दारोमदार कराकर दिया।

आचरण के इन पहलुओं से मुसलमानों का साँस्कृतिक चेहरा एक पसन्दीदः और आकर्षक रूप में जाहिर होता है। समान व्यवहार, रहमदिली, तरक्क़ी, आपस में बिरादरी और मनुष्यता का आँखों में उतर जाने वलाा चेहरा सामने आता है। मोमिन का पूरा जीवन सौन्दर्य और हित की प्रतिमूर्ति बन जाता है, सरापा खैर बन जाता है। आप सल्ल0 ने मोमिन की मिसाल खजूर के पेड़ से दी है जिस की हर चीज़ लोगों के लिये लाभदायक होती है।

सामाजिक जीवन

सामजिक जीवन देखिये तो इस्लामी कलचर के दायरे अनेक जगहों पर नज़र आयेंगे। धरेलू जीवन, मदरसा मस्जिद, मजलिस, बाजार, व्यापार और राजनीति आदि इन सब मैदानों में इस्लामी शिक्षा बिखरी मिलेगी। और यह क्षेत्र अत्यन्त सन्तुलन के साथ सुसज्जित नजर आयेंगे।

तिजारती मैदान में आइये। किसी मुसलमान को इस बात की इज़ाजत नहीं है कि वह धोखा या चाल बाजी करे। सामान की किसी खराबी को छिपाकर उसे बेच दे। एक आदमी भाव–ताव कर रहा है तो उस पर भाव–ताव करे। या अपनी तिजारत के जरियः दूसरों का हक मारे। इसी तरह यह भी जायज नहीं कि अपनी पूरी कोशिश इस बात पर लगा दे कि खजानों और दौलत का ढेर एकत्र हो जाये। और दीन–दुखियों तथा अन्य ज़रूरतमन्दों का ध्यान न रखे। अल्लाह ने अनेक नियमों के जरियः

माली पहलू को सन्तुलित बनाया है।

राजनीतिक मैदान

राजनीतिक क्षेत्र में आइये तो इस्लाम सब से पहले यह हुक्म देता है कि मन्सब और पद ऐसे व्यक्ति को नहीं सौंपा जायेगा जो इस का तलबगार हो। अलबत्ता अगर किसी के पास उसकी तलब के बिना आ जाये तो फिर स्वीकार करना दुरूस्त है। लेकिन जो व्यक्ति ओहदा तलब कर रहा हो आप सल्ल0 की नजर में वह पद के योग्य नहीं। हाँ, अगर इस्लाम और मुसलमानों की कोई बड़ी ज़रूरत पेश आ जाये तो तलब करने की गुंजाइश है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ओहदा के पास अमानत करार दिया न कि कोई ऐसा वज़ीफ़ा और जरियः जिस से माली फ़ायदा जुड़ा हो। इस बात में कोई दो राय नहीं कि आज के अक्सर सियासी फ़साद और बिगाड़ का स्रोत यही है कि मन्सब व ओहदा का प्रार्थना पत्र एक व्यक्ति अवाम के सामने इस तरह पेश करता है जैसे वह कोई वज़ीफ़ा हो, फिर उस की प्राप्ति के लिये सारे जतन कर डालता है। हर सही और प्रोपेगन्डा का वर्तमान प्रचलित तरीका पूरे माहौल को प्रदूषित कर देता है। अत्यन्त घिनाउनी तस्वीरें सामने आती हैं, जो सब से पहले अवाम के दिलों से बुराई के एहसास की हल्का कर देती हैं और वह अपराध स्वीकार करने योग्य बन जाते हैं, फिर पूरी कौम की साँस्कृतिक आत्मा इस से प्रभावित होती है। सच्चाई, पाकीजगी, सद्आचरण और आत्म गौरव जैसे गुण दफ़न हो जाते हैं और इसी गोश्त–पोस्त के इन्सान से एक बिका हुआ और एक खरीदार का व्यक्तित्व उभरता है, बल्कि एक चालबाज़ और फ़रेब देहेन्दः की तस्वीर सामने आती है।

इस लोकतन्त्रिक व्यवस्था ही के अनुरूप जाबिरानः आमेरानः (तानाशाही) व्यवस्था भी है, वह व्यवस्था लोगों के अन्दर चापलूसी, स्वार्थ तथा अति व अत्याचार पैदा कर देती है। फिर लोगों की दो किस्में हो जाती हैं– एक जालिम व जाबिर दूसरा मजलूम व बेबस। इन दोनों नफरत वाले तरीकों से बचने की सूरत सिर्फ उसी व्यवस्था और तरीकः में है जिस का विचार अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने प्रस्तुत किया है, अर्थात मुसावात (बराबरी) का विचार, लोग बराबर हैं, सब के सब एक आदम से पैदा किये गये हैं। अगर किसी को बरतरी है तो सिर्फ अपने अमल व किरदार में एहतियात और खुदा के खौफ़ (भय) की बुनियाद पर। और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 का एक बड़े हाकिम को सम्बोधित करके कहना कि, "कब से तुम ने लोगो को गुलाम बना लिया है, उन की माओं ने तो उन को आजाद जना था।" इन गलत राजनीतिक व्यवस्थाओं का सुधार अत्यन्त आवश्यक है। और वह इस्लाम का सही विचार ही पेश करने से होगा।

(जारी.....)

❑❑

अपनी नीयत का क़िबला ठीक..

उनके तकाजों पर अमल न करें तो क्या फाइदा? अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का शुक्र अदा कीजिये कि उसने "ऐहदिनससिरातल मुस्तक़ीम" के दरवाजे में दाखिल कर दिया है, अब फाइदा उठाना आप का काम है, इल्म सही तोर पर हासिल करें, क्योंकि आगे आपको उम्मते मुस्लिमा बल्कि पूरी इनसानियत का हादी व मुरब्बी और मुसलेह व मुअल्लिम बनना है, और इसी के मुताबिक अपनी ज़िन्दगी को ढालें, वरना पाँच साल पढ़ा और इल्म एक साल का हासिल किया तो गोया आपने चार साल बरबाद कर दिया। हरवक़्त ध्यान रखये कि यहाँ क्यों आए हैं? बेकार ज़िन्दगी न गुज़ारें दारूल उलूम के इन्तिजामात की क़द्र कीजिये फ़रागत से कब्ल कुछ हासिल करके जाइये, एक–एक लम्हे से फाइदा उठाये जिगर मुरादा बादी ने कहा है क़ीमत ग़मे हयात की तू दाम–दाम ले बहार हो कि ख़जाँ तू सबसे काम ले।

यानी ख़ुदा ने जो ज़िन्दगी दी है उसको गनीमत समझये, बहार ख़जाँ, सख्त व आराम देह दोनों हालात में वक़्त की कीमत वसूल कीजिये, इसके बअ़द ही कोई मुक़ाम हासिल होगा और आप किसी लाएक होंगे, ख़ुदा आप सबकी मदद करे और नियत में एख़लास अता फ़रमाए और हम सब को दीन की ख़िदमत के लिये क़ुबूल फ़रमाए।

❑❑

किस्त 22

हम कैसे पढ़ायें?

पढ़ने के लिये आमादा करना (उत्प्रेरणा-मोटीवेशन)

शिक्षक बन्धुओं के लिये — डा0 सलामतुल्लाह सा0

मानसिक सक्रियता

बच्चों में स्कूल का काम करने की इच्छा पैदा करना या उन्हें पढ़ने के लिये आमादा करना शैक्षिक शब्दावली में 'मानसिकता सक्रियता' कहलाता है।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि क्या स्कूल का काम स्वतः बच्चों के लिये रोचक नहीं होता कि उसे रोचक बनाने के लिये बाहरी विधि अपनाने की ज़रूरत हो? अगर स्कूल की व्यस्ततायें बच्चों की रूचि के अनुसार हैं अर्थात वे उस के स्वभाव से मेल खाते हैं और उसके रूजहान के अनुसार हैं तो फिर बच्चों को उन पर आमादा करने का कोई अर्थ नहीं। वह तो स्वयं उन्हें करने के लिये बेताब होंगे। जब बच्चे अपनी बेशुमार दिलचिस्पयाँ रखते हैं तो फिर उन्हें ऐसे काम कराने से क्या फाइदा जिन के लिये बाहर से अतिरिक्त उत्प्रेणा जरूरी हो?

निस्सन्देह बच्चे की दिलचस्पियों का वृत बहुत विस्तृत होता है लेकिन स्कूल जिन व्यस्तताओं को उस के लिये जरूरी समझता है उन में से कुछ ऐसी भी हैं जिन से उसे प्रत्यक्ष रूप से कोई दिलचस्पी नहीं होती। इन में से कुछ तो ऐसे जरूर होते हैं जो स्वतः उसका ध्यान अपनी तरफ खींच लेते हैं, और वह उन्हें सहर्ष बिना किसी बाहरी सक्रियता के प्राप्त करने का पूरा प्रयास करता है। उन के लिये मात्र किसी विषय, प्रश्न या समस्या का तजवीज़ कर देना (प्रस्तावित कर देना) काफी होता है। लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो उस के मानसिक विकास के लिये भी जरूरी हैं और सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्व रखते हैं। किन्तु उसके स्वाभाविक रूजहान (झुकाव) से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध नहीं रखते। ऐसी दशा में कुछ ऐसे उपाय करने होते हैं कि वह आसानी से इन व्यस्तताओं के लिये तैयार हो जाये।

मानसिक सक्रियता का उद्देश्य

जब तक मानसिक सक्रियता का उद्देश्य सही तौर पर न समझ लिया जाये, इस बात का खतरा है कि कहीं हम इस से तालीमी काम लेने के बजाय, इसे मात्र बच्चों के मनोरजन का ज़रियः न बना दें। जिस तरह उन लोगों ने जो अभिरूचि (दिलचस्पी) के सिद्धान्त पर ज़रूरत से ज्यादा जोर देते हुए हर चीज को आसान बनाने के लिये अस्वाभिक और बनावटी तरीके अपना लिये हैं, इसी तरह मानसिक सक्रियता के समर्थक भी कभी हद से बढ़ जाते हैं, और हर बात को ऐसे अन्दाज में पेश करने की कोशिश करते हैं जैसे रोगी को कड़वी और बदमज़ा गोलियाँ शकर में लपेट कर दी जायें। कुछ टीचर समझते हैं कि अगर वह बच्चों के सामने कुछ खुश करने वाली या दिल बहलाने वाली चीजें पेश करेंगे, तो सबक पढ़ने में बच्चे व्यस्त रहेंगें यह दुरूस्त है कि "मानसिक सक्रियता" (उत्प्रेरणा) और "मनोरंजन" में दिलचस्पी एक कामन फैक्टर है। किन्तु दोनों में दिलचस्पी की किस्म अलग–अलग है। वास्तविक उत्प्रेरणा में बच्चों की दिलचस्पी अधिक टिकाऊ होती है। क्यों कि इस के लिये उन्हें कोशिश भी करनी पड़ती है जो कठिन से कठिन समस्याओं को हल करने में मदद देती है। इस के विपरीत मनोरंजन में दिलचस्पी मात्र अस्थायी और धरातलीय होती है जो बिल्कुल उत्प्ररित नहीं करती। यह सिर्फ थोड़ी देर के लिये भली मालूम होती है। वास्तविक उत्प्रेरणा में बच्चों के अंगों के लिये हर पग पर एक मुहिम (अभियान) होती है जिसे सर कर के वह आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं।

दिलचस्पी और कोशिश

हर काम के लिये एक हद तक दिलचस्पी की ज़रूरत है। यदि पाठ का विषय रूखा है और इस में

स्वाभाविक कोई दिलचस्पी मौजूद नहीं है तो इसे रोचक बनाने के लिये दूसरे साधन प्रयोग किये जा सकते हैं। प्रायः देखा गया है कि कोशिश दिलचस्पी पैदा कर देती है, और विषय वस्तु जो प्रारम्भ में कठिन और रूखा मालूम होता है थोड़े से प्रयास के बाद रोचक मालूम होने लगता है बिना ज़रूरत तफरीही सामान मुहैया करने का यह नतीजा होता है कि बच्चों में ज्ञानार्जन की सच्ची रूचि कभी पैदा नहीं होने पाती क्यों कि शौक के लिये कोशिश बहुत जरूरी चीज़ है।

ज्यों–ज्यों बच्चों शैक्षिक सोपानों से गुजरते जायेंगे उन्हें विषय वस्तु से स्वतः दिलचस्पी होती जायेगी और स्कूल के काम को बाहरी तरीकों से दिलचस्पी बनाने की ज़रूरत भी कम होती जायेगी।

आमादा करने वाले कारक दो होते हैं:– **(1) स्वाभाविक। (2) कृत्रिम।**

1. स्वाभाविक कारक

वह स्रोत जिन पर वास्तविक उत्प्रेरणा निर्भर है, बच्चों के स्वभाव में मौजूद है उनकी जिज्ञासायें और भावनायें। उत्प्रेरणा का असल मकसद यह है कि शैक्षिक वातावरण की संरचना इस प्रकार की जाये कि यह स्रोत स्वतः उबल पड़ें। शिक्षण में बच्चों के जन्मजात रूजहान जैसे खेल, रचना की जिज्ञासा तथा होने की 'हाँ' की आदतों से काम लेना चाहिये। दूसरे शब्दों में स्कूल की व्यस्तताओं को इस प्रकार क्रमबद्ध करना चाहिये कि बच्चों को खेलने कूदने, कुरेद करने, बनाने, बिगाड़ने और अपने व्यक्तित्व को उजागर करने के अधिक से अधिक अवसर मिलें।

2. कृत्रिम कारक

कुछ तरकीबें ऐसी भी हैं जो स्वाभाविक कारक की हैसियत तो नहीं रखतीं, किन्तु नतीजे के ऐतबार से बहुत लाभदायक हैं। कुछ पढ़ाये जाने वाले विषय किसी खास पेशे के लिये बहुत महत्वपूर्ण होते हैं जैसे गणित, इन्जीनियरिंग के लिये, भूगोल के कुछ हिस्से जैसे मानचित्र बनाना, नक्शा पढ़ना सर्वेक्षण के लिये, ऐसी दशाओं में बच्चों को पाठ विषय से यह कह कर दिलचस्पी दिलाई जा सकती है कि अमुक पेशे में बहुत काम आता है। या यह कि ज्ञान के सभ्यता वाले पहलू पर बल देकर कुछ विषय जैसे साहित्य, सामाजिक ज्ञान, सामान्य विज्ञान आदि पढ़ाये जाते हैं। अर्थात बच्चों को स्पष्ट बताया जा सकता है कि इन बातों का जानना प्रत्येक सभ्य आदमी के लिये जरूरी है। कभी–कभी यह कहकर बच्चों को अध्ययन का शौक दिलाया जा सकता है कि इस में तुम्हारी या तुम्हारीकक्षा की नामवरी होगी। लेकिन यह बात याद रखनी चाहिये कि उपरोक्त कारक सिर्फ बड़े बच्चों के लिये कारामद हैं, बहुत छोटे बच्चों के लिये इस प्रकार के प्रयास प्रायः बेकार होते हैं।

पढ़ने पर आमादा करने के तरीके

(1) तेज़ी से प्रश्न करना– इस से यह मतलब नहीं कि इतनी तेज़ी से बच्चों से प्रश्न पूछे जायें कि उन पर सोचने के लिये बच्चों को समय न दिया जाये बल्कि असल मकसद यह है कि ऐसी मुस्तअदी (चुस्त दुरूस्त) और तेज़ी से सवाल किये जायें कि बच्चों की मानसिक सक्रियता जाग उठे।

(2) व्याख्या और भावार्थ प्रस्तुत करना – समुचित प्रकार के चित्र या तस्वीरें प्रस्तुत करने से, अथवा किसी चीज़ को प्रयोगात्मक ढंग से कर के दिखाने से बच्चे पाठ पढ़ने के लिये तैयार हो जाते हैं।

(3) पाठ को एक हल तलब (समाधान की ज़रूरत) समस्या के रूप में प्रस्तुत करना– यदि कोई चीज़ बच्चों के सामने एक समस्या के रूप में प्रस्तुत की जाये जिसे हल करने के लिय वह आतुर हो उठें तो वह उसे पूरी तनमयता से सीखने की कोशिश करेंगे।

(4) व्यक्तिगत अथवा सामूहिक प्रोजेक्ट चलाना– प्रोजेक्ट के सिलसिले में बच्चे जो कुछ सीखते हैं, उस का एक प्रयोगात्मक महत्व होता है। इस की ज़रूरत का एहसास बच्चों को काम करने पर आमादा करता है, उत्पेरित करता है।

(5) बच्चों को शैक्षिक भ्रमण के लिये ले जाना– इतिहास, भूगोल और सामान्य विज्ञान के सिलसिले में छोटे–छोटे सफर बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इन में बच्चे जिन चीजों का निरीक्षण करते हैं, देखते हैं उनके बारे में और

शेष पृष्ठ 10

हज़रत अली (रज़ि०) की अपने बेटों को वसीयत

- नजुस्साकिब अब्बासी नदवी

हज़रत अली (रज़ि0) अपने दोनों हृदय के टुकड़ो को जीवन के अन्तिम समय में वसीयत करते हैं : मैं तुम दोनों को तक्वाइल्लाही (ईश्वरीय भय) की वसीयत करता हुँ, और उसकी दुन्या का पीछा न करना यदि वह तुम्हारा पीछा करे, जो चीज़ तुमसे दूर हो जाए उसपर न कुढ़ना, हमेशा हक पर अमल और सच बात कहना, यतीम पर दया करना, बेबस की मदद करना, परलोक (आख़िरत) के लिए अमल करना, अत्याचारी का विरोध और उससे शत्रुता रखना, पीड़ित की सहायता व समर्थन करना, कुर्आन की तिलावत और अल्लाह की किताब पर अमल करना, पड़ोसी से सद्व्यवहार करना, अश्लील और वर्जित कार्यों से बचना तथा अल्लाह के मुआमले में किसी निन्दा करने वाले की निन्दा की परवाह न करना। फिर अपने तीसरे बेटे मुहम्मद बिन हनफियः की और देखा और कहा कि जो नसहीत मैंने तेरे भाईयों को की तूने याद करली? उन्होंने कहा : जी हाँ!। हज़रत अली (रज़ि0) ने कहा : मैं तुझे भी यही वसीयत करता हुँ, अपने दोनों भाईयों के बड़े अधिकार का ध्यान रखना, उनका कहा मानना, बगैर उनकी राय के कोई काम न करना।

फिर हज़रत इमाम हसन (रज़ि0) और हुसैन (रज़ि0) से कहा : मैं तुम्हें उसके बारे में वसीयत करता हुँ क्योंकि ये तुम्हारा भाई तुम्हारे बाप का बेटा है और तुम जानते हो कि तुम्हारे पिता उससे प्यार करते हैं।

फिर इमाम हसन (रज़ि0) से कहा : बेटा! मैं तुम्हें वसीयत करता हुँ अल्लाह से ड़रने की, नमाज़ को अपने समय पर अदा करने की, नियत समय पर ज़कात (विशेष इस्लामी कर) अदा करने की, अच्छी तरह वुजू करने की, क्योंकि नमाज़ बिना पवित्रता के सम्भव नहीं, और ज़कात में अवरोधक डालने वाले की नमाज़ स्वीकार्य नहीं, मैं वसीयत करता हुँ खताएं मुआफ करने की, धार्मिक सिद्धान्तों में ज्ञान व बुद्धि की, सभी मुआमलों में जाँच–परख की, अच्छी बातों का आदेश और बुरे कामों से रोकने की, अश्लील और वर्जित कार्यो से बचने की।

फिर अपने सभी औलादों को सम्बोधित किया कि "अल्लाह से डरते रहो, उसकी मानते रहो, जो तुम्हारे हाथ में नहीं है उसका ग़म न करो, उसकी उपासना हेतु सदैव तैयार रहो, चुस्त और चालाक बनो, सुस्त न रहो, अपमान स्वीकार न करो, अल्लाह हम सबको सीधे रास्ते पर इकट्ठा कर दे, हमें और उन्हें दुन्या के प्रति अरूचिकर बना दे, हमारे और उनके लिए परलोक (आखिरत) पहले से बेहतर कर दे।

हज़रत अली (रज़ि0) ने इन्तेकाल के वक़्त ये वसीयत लिखाई : ये अली पुत्र अबू तालिब की वसीयत है, वह गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं, मेरी नमाज़, मेरी उपासना, मेरा जीना, मेरा मरना, सब कुछ अल्लाह के लिये है, उसका कोई साझी नही, उसी का मुझे आदेश दिया गया है और में सबसे पहला मानने वाला हुँ।

फिर ऐ हसन! मैं तुझे और अपनी औलाद को वसीयत करता हुँ कि अल्लाह से डरना, और जब मरना तो इस्लाम ही पर मरना, सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो, आपस में फूट न ड़ालो क्योंकि मैंने अबू कासिम (मुहम्मइ (सल्ल0)) को कहते सुना है कि आपस का मिलाप रखना रोजे नमाज़ से भी बहुत अच्छा हैं, अपने रिश्तेदारों का ख्याल रखो, उनसे भलाई करो, खुदा तुमपर हिसाब आसान कर देगा, और हाँ! यतीम! यतीम! यतीमों का ध्यान रखो, उनके मुंह में मिट्टी मत ड़ालो, वह तुम्हारी मौजूदगी में बर्बाद न होने पाएं और देखों तुम्हारे पड़ोसी! अपने पड़ोसियों का ध्यान रखो क्योंकि ये तुम्हारे पैग़म्बर की वसीयत है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पड़ोसियों हेतु बराबर वसीयत करते रहे यहाँ तक कि हम समझे कि शायद उन्हें विरासत में साझीदार बना देंगे, और देखो! कुर्आन! कुर्आन! ऐसा न हो कि कुर्आन पर अमल करने से तुम पर कोई बाजी मार ले जाए। और नमाज़! नमाज़! क्योंकि वह तुम्हारे धर्म का स्तंभ है, और तुम्हारे रब का घर! अपने रब के घर से बेखबर न होना। और अल्लाह के रास्ते में जिहाद! अल्लाह के रास्ते में जिहाद! अल्लाह की राह में जान व माल से जिहाद करते रहो, और जकात! जकात! पालनहार का गुस्सा ठंडा कर देती है। और हाँ तुम्हारे पैग़म्बर के ज़िम्मी! तुम्हारे पैग़म्बर के ज़िम्मी (अर्थात वह ग़ैर मुस्लिम जो मुसलमानों के शरण में हैं) ऐसा न हो कि उन पर तुम्हारे सामने अत्याचार किया जाये, और तुम्हारे नबी (सल्ल0) के सहाबी! तुम्हारे नबी (सल्ल0) के सहाबी! याद रखो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबियों के हक में वसीयत की है, और गरीब, निर्धन! गरीब, निर्धन! उन्हें अपनी जीविका में शामिल करो, और तुम्हारे गुलाम! तुम्हारे गुलाम! गुलामों का ध्यान रखो। अल्लाह के मुआमले में किसी से परवाह न करोगे तो खुदा तुम्हारे शत्रुओं से तुम्हें सुरक्षित कर देगा। अल्लाह के सभी बन्दों से प्रेम करो। मीठी (अर्थात नर्म) बात करो। ऐसा ही खुदा ने आदेश दिया है। लोगों को भलाई का हुक्म और बुरी बात से रूकने का आदेश देते रहना अन्यथा तुम्हारे उपर बुरे लोग खड़े कर दिये जाएंगे, फिर तुम प्रार्थनाएं करोगे किन्तु स्वीकार न होगी।

परस्पर मिले–जुले रहो, निःसंकोच और सादगी से रहो, सावधान! एक दूसरे से न कटना और न अपास में फूट डालना। नेकी और तक़्वा पर परस्पर मददगार रहो, किन्तु पाप और अत्याचार में किसी की सहायता न करना। अल्लाह से ड़रो क्योंकि उसका दण्ड बहुत कठोर है। ऐ अहले बैत! खुदा तुम्हें सुरक्षित रखे और अपने नबी (सल्ल0) के तरीके पर कायम रखे। मैं तुम्हें खुदा ही के सुपुर्द करता हुँ, तुम्हारे लिये सलामती और बरकत चाहता हुँ। उसके पश्चात कल्मा तैय्यबः पढ़ा और हमेशा के लिये आखें बन्द कर लीं।

(तबरी जि0 6, पृ0 86)

एक बार हसनैन (रज़ि0) से कहा कि तुम दोनों को मेरी वसीयत है अल्लाह से डरने की, दुन्या के पीछे न पड़ने की, उसके वंचन (महरूमी) पर न कुढ़ने की, सत्य बात कहने की, अत्याचारी के विरोध की, पीड़ित के समर्थन की, कुर्आन के पाठ (तिलावत) की, लोगों की खताएं मुआफ करने की, पडोसी से सद–व्यवहार की, अश्लीलता से बचने की।

फिर आप ने अपने बेटे हज़रत हसन (रज़ि0) से कहा : ऐ मेरे बेटे! तुम मेरी आठ बातें याद रखना, तुम उनपर अमल करते रहोगे तो अल्लाह ने चाहा तो तुम्हें कोई हानि न पहुँचेगी, असल मालदारी अक्ल की मालदारी है और मूलनिर्धनता मुर्खता है और सबसे अधिक भय स्वेच्छा चारिकता (खुदपसन्दी) का है, और बेहतरीन वर्ग, नस्ल सद्व्यवहार है। और प्यारे बेटे! बख़ील की दोस्ती से बचते रहना, इसलिये कि वह तुझ से तेरी ज़रूरत के लोगों को दूर कर देगा, और पापी तथा अवज्ञाकारी की दोस्ती से भी बचते रहो इसलिये कि वह तुमको औने–पौने दामों में बेच देगा, इसी प्रकार झूठे व्यक्ति की भी दोस्ती से बचते रहना इसलिये कि वह रेत के भांति है जो तुमसे दूर को निकट कर देगा और करीब को दूर।

(मुख्तारातुल्अ़दब, ज़ैदान बदरान पृ 10)

अपने बेटे हसन (रज़ि0) को और अधिक वसीयत करते हुए कहा कि "ऐ मेरे बेटे! मैं तुमको वसीयत करता हुँ अल्लाह से डरने की और सत्य कथन की प्रसन्नता और क्रोध की अवस्था में। ऐ मेरे बेटे! जिसने अपने भाई के लिये गडढ़ा खोदा वह स्वयं उसमें गिरेगा, और जिसने खुद्दराई इख़्तियार की उसने ग़लती की, और जो अपनी बुद्धि के कारण सम्पन्न हो गया उसने ख़ता की, और जिसने नीच लोगो की संगति अपनाई उसको अपमानित किया गया, और जो उलमा में बैठा सम्मानित बन गया, और सन्तोष कभी न समाप्त होने वाला धन है,

शेष पृष्ठ 9

व्यवहारिक जीवन में रौशनी के मीनार मुहम्मद (सल्ल०) के आचरण

– एम० हसन अंसारी

समाज सुधार

– मौ० अब्दुल्लाह अब्बास नदवी (र०)

पैगम्बर मुहम्मद सल्ल0 की पाक बीवी हजरत आयशा रज़ि0 से आप सल्ल0 के आचारण के बारे में दरयाफ्त किया गया तो फरमाया, 'कुर्आन में जो सदाचरण बयान किये गये हैं वह सब आप सल्ल0 के अन्दर पाये जाते थे।

"सच बोलना, झूठ की बुराई, इल्म बे अमल की मजम्मत (भर्तस्ना), आम माफ़ी, दरगुज़र, सन्तोष, धैर्य, शुक्र, हक़ पर अडिग रहना, खुदा की राह में जान देना, कंजूसी की बुराई, फ़ुज़लख़र्ची से मनाही, मियानः रवी (मध्यम मार्ग अपनाना) की ताकीद, रिश्तेदारों, अनाथों, दीन दुखियों, पड़ोसियों के साथ नेकी, मुसाफिरों, माँगने वालों और गरीबों की सहायता (इमदाद), गुलामों और कैदियों के साथ एहसान, घमण्ड और गुरूर की बुराई, अमानतदारी, वादा का पूरा करना, समझौतों का लेहाजरखना, दान व खैरात, नेकी व भलाई की बात करना, आपस में लोगों के बीच प्रेम पैदा करना, किसी को बुरा भला न कहना, किसी को न चिढ़ाना, न बुरे नामों से याद करना, माँ–बाप की सेवा और आज्ञा मानना, मुलाकातों में आपस में भलाई और सलामती की दुआ देना, इन्साफ पसन्दी, सच्ची गवाही देना, गवाही न छिपाना, झूठी गवाही का दिल की गुनाहगारी पर असर, नर्मी से बात करना, ज़मीन पर अकड़ कर न चालना, सुलह–समझैता, मेल–जोल, इस्लामी बिरादरी, हलाल रोजी, रोजी खुद हासलि करना, तिजारत करना, गदागरी (भीख माँगना) की मनाही, लोगों को अच्दी बात की तालीम देना और बुरी बात से रोकना, औलाद को मारडालना, आत्महथ्या और किसी दूसरे की जान लेने की मनाही, यतीम की कफालत (अनाथ की जिम्मेदारी), उसके माल व जायदाद की नेकनीयती से हिफाजत, नाप तौल में बेइमानी न करना, मुल्क में फसाद बरपा न करना, बेशर्मी की बात से रोकना, जिना की हुरमत (बलात्कार का हराम होना), आँखें नीची रखना, किसी के घर में बेइजाजत दाखिल न होना, पर्दा, खयानत की बुराई, आँख, कान और दिल की बाजपुर्स (पूछना, तहक़ीक़ होनी), नेकी के काम करना, बेकार की बातों से बचना, अमानत और अहद की रेयायत, त्याग, सहनशीलता, दूसरों को माफ़ करना, दुश्मनों से दरगुजर, बदी के बदले नेकी करना, गुस्सा की बुराई, मुनाजिरों (शास्त्रार्थ) और विरोधियों से बात चीत में आदाब का लेहाज, मुश्रिकों के बुतों तक को बुरा न कहना, फैसला में इन्साफ व न्याय, दुश्मनों तक से इन्साफ, सदक़ः व खैरात के बाद लोगों पर एहसान धरने की बुराई, उलाहनें की मजम्मत, गुनाह और हरामकारी से नफरत, चोरी, डाका, रहज़नी और दूसरों के माल को बेईमानी से लेने की मनाही, अच्छी नीयत और दिल की पाकीजागी, पाक बाजी जताने की बुराई, रफ़्तार में वकार व मतानत (गम्भीरता), मजलिसों में सद्व्यवहार, बूढ़ों, कमजोरों और औरतों के साथ नेकी, शौहरों (पतियों) की इताअत (आज्ञापालन), बीवी का हक़ अदा करना, नाहक कसम खाने की बुराई, चुगलखोरी, ताना जनी और तोहमत धरने की मनाही, जिस्म व जान और कपड़ों की पाकीजगी और तहारत, शर्मगाहों (गुप्त अंगों) की पर्दा पोशी, सायल (माँगने वाले) को न झिडकना, यतीम को न दबाना, खुदा की नेमत को जाहिर करना, गीबत न करना, बदगुमानी न करना, सब पर रहम करना, रिया और नुमाइश की नापसन्दीदगी, कर्ज देना, कर्ज माफ करना, सूद और रिश्वत की मनाही, अडिग रहना, दृढ़ता और बहादुरी की खूबी, लड़ाई के धमसान से भाग खड़े होने की बुराई, शराब पीने और जुआ खेलने की मनाही, भूखों को खाना खिलाना जाहिरी और अन्दर की हर तरह की बेशर्मी की बातों से परहेज़, बेगरज नेकी करना, माल व दोलत से मुहब्बत न होना, जुल्म से मना करना, लोगों से बेरूखी न करना, गुनाह से बचना, एक दूसरे को हक पर कायम रखने की आगाही मामलात में सच्चाई और दियानतदारी।"

◻◻

एकता का अनुरोध

- सिक्रेट्री दावत व इर्शाद विभाग नदवतुल उलमा

सृष्टि रचयिता अपने बन्दों से कहता है :

जब दो ईमान वाले गुट आपस में लड़ पड़ें तो उन में मेल करा दिया करो, फिर उन में से एक गुट ईशादेश (इलाही अहकाम) भुलाकर दूसरे गुट पर अति (ज़ियादती) करने लगे तो तुम अति करने वाले गुट के विरोध में आजाओ यहाँ तक कि वह ईशादेश (इलाही अहकाम) की ओर लौट पड़े पस जब वह अपने अति को छोड़ दे और अपनी गलती मान ले, तो तुम दोनों गुटों में उन के झगड़ों में : न्याय करते हुए आपस में मेल करा दो। निःसन्देह अल्लाह तआला न्याय प्रेमियों को प्रिय रखते हैं। ईमान वाले तो सब आपस में भाई ही हैं, तो फिर अपने भाइयों में मेल करा दिया करो। (पवित्र कुर्आन सूर–ए–हुजुरात आयत 9,10)

बड़े अफ़सोस की बात है कि इन इलाही अहकाम (ईशादेशों) के पूरा करने में बड़ी असावधानी और कमी हो रही है, बल्कि इस का उल्टा एक कल्मा (अर्थात केवल अल्लाह को पुज्य मानना तथा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रसूल मानना) पर विश्वास रखने वालों में परस्पर एक दूसरे को काफ़िर (अल्लाह का इन्कारी) कहने का बाजार गर्म है। जब एक गुट दूसरे को मुसलमान ही नहीं समझ रहा है तो तीसरा उन में मेल किस तरह कराए। आज बरेलवी हजरात देवबन्दी हजरात को एवं अहले हदीस हजरात को इस्लाम से निकला हुआ बता रहे हैं तो कुछ अहले हदीस हजरात देवबन्दी तथा बरेलवी दोनों को मुशरिक (अनेकेश्वरवादी) ठहरा रहे हैं, और कुछ अहले हदीस तकलीद (इमामों का अनुसरण) को शिर्क (अल्लाह का साझी बनाना) बता रहे हैं, जब कि देवबन्दी हजरात इमामों की बुराई करने वाले अहले हदीस को फासिक (अवज्ञाकारी) और अल्लाह के अतिरिक्त के सामने नतमस्तक होने वाले (सजदा करने वाले) और उन से अपनी मुरादें माँगने वाले, तआजियों से मन्नत मानने वाले बरेलीयों को मुशरिक कहते हैं।

मुझ जैसे कालेज और यूनी–वर्सिटी के स्कालर्स जब इस्लाम का अध्ययन करते हैं तो उस के साफ सुथरे अकाइद (आस्थाओं) कि पूज्य केवल अल्लाह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उस के सन्देष्टा है अब उन के सन्देशानुसार जीवन का हर कार्य होना है। उसकी प्रसिद्ध उपासनाएं नमाज, रोजा, जकात तथा हज्ज से ऐसे प्रभावित होते हैं कि विश्व के सभी धर्मों पर प्रधानता देते हैं तथा इस्लाम से आत्मिक शान्ति तथा हार्दिक सन्तोष प्राप्त करते हैं और जब अपने गैर मुस्लिम भाइयों को हदीसे जिब्रील से "इस्लाम क्या है? ईमान क्या है? एवं एहसान क्या है? और कियामत (इस्लामिक महाप्रलय) के विषय में परिचय देते हैं तो उन के मुख से प्राकृतिक धर्म अथवा सत्य धर्म कहते सुनते हैं। परन्तु जब पैतृक मुसलमानों और इस्लामी स्कूल के छात्रों से मिलते हें तो यह सत्य है कि उन में का हर एक गवाही देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और गवाही देता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, बरेलवीयों, देवबन्दियों और अहले हदीस तीनों में छान मारिये कोई एक भी न मिलेगा जो इन उक्त दोनों गवाहियों का इन्कार करे इसी प्रकार यह सब अल्लाह पर, अल्लाह के फिरिशतों पर, उस के रसूलों पर, उस की किताबों पर, कियामत के दिन पर तकदीर (भाग्य) पर कि भली हो या बुरी अल्लाह ही की और से है, इन सब पर ईमान रखने में सभी गुट सहमत हैं।

इन सभी गुटों का हर व्यक्ति नमाज, रोजा, जकात, हज्ज की फर्जीयत (अनिवार्य होना) का काइल है और इन में जो दीनदार कहलाता है इन का पाबन्द (आबद्ध) है उन को अपनाए हुए है इन में एक शख्स भी पवित्र कुर्आन में किसी भी प्रकार के हेर फेर को नहीं मानता, इन में

का हर व्यक्ति अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों अर्थात सहाब–ए–किराम के बारे में यही कहता और विश्वास रखता है कि अल्लाह उन से राजी हुआ, तथा खुलफाए राशिदीन, अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली और हसन (इन सब से अल्लाह राजी हुआ) को उम्मत में श्रेष्ठ (अफ़ज़ल) मानता है और किसी कम से कम दर्जे के सहाबी की निन्दा करने को पाप जानता है, इन में का हर व्यक्ति हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ख़ातिमुल अंबिया वलमुर्सलीन मानता है और उम्मत में किसी किस्म की नुबुव्वत या रिसालत को (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पश्चात असम्भव मानता है, निःसन्देह हजरत ईसा अलैहिस्सलाम आखिर ज़माने में आसमान से उतरेंगे परन्तु वह पहले से नबी हैं, वह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की उम्मत में दज्जाल के कत्ल के लिये आसमान से उतारे जाएंगे वह नये तौर पर नबी न बनाये जाएं, वह हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शरीअत पर चलेंगे। इन उक्त संगठनों का एक एक व्यक्ति अल्लाह और उस के रसूल के प्रेम को अनिवार्य मानता तथा नजात के लिये अत्यावश्यक जानता है। क्या यह महत्वपूर्ण एकताएं आपसी एकता के लिये परियाप्त नहीं हैं? बेशक हैं बस साहस व हिम्मत चाहिये।

इन सारी बातों के साथ इन में प्रस्पर नाते दारियाँ और रिश्तेदारियाँ भी हैं, यह रिशतेदारियाँ किसी मजबूरी से नहीं, इन्तिखाब, इख्तियार और पसन्द से हुई हैं और हो रही हैं, इस के साथ ही सब एक दूसरे का जबीहा भी खाते हैं, बड़े, छोटे, और मुर्गे का गोश्त बेचने वाले बरेलवी भी हैं और देवबन्दी भी किस की दूकान से कौन गोश्त नहीं लेता, शादी विवाह की तक़रीब में पता लगा लीजिये सब एक दूसरे का जबीहा खाते हैं। इस से आगे बढ़ये जरा मस्जिद की पंजवक्ता नमाजों, जुमें और दोनों ईदों की नमाजों का सर्वे कीजिये हजारों लाखों बरेलवी देवबन्दी एक दूसरे के पीछे नमाजें अदा करते मिलेंगे।

हाँ यह सहीह है कि हमारे बरेलवी बुजुर्ग हज्ज को जाते हैं तो खुद को और अपने मानने वालों को वहाँ के इमाम के पीछे नमाज पढने से रोकते हैं मगर बहुत थोड़ी तादाद उनका कहना मान कर बड़ी ज़माअत के सवाब से महरूम हो जाती है। मगर वहाँ का जबीहा खाने से कौन बच कर आता है?

हदीस में है जो बरेलवी हजरात भी पढ़ते पढ़ाते है जिसका मफहूम यह है कि मदीना तय्यिबा अपने अन्दर से बुरे लोगों को ऐसे निकाल देता है जैसा लुहार की भट्ठी लोहे के मैल को निकाल देती है। (मिशकात बाब हरमुल मदीना) क्या इस हदीस के जान लेने के बाद भी यह कहने की हिम्मत है कि मदीने की मस्जिद का इमाम बुरा है और उस के पीछे नमाज न पढ़ी जाए? खुदा की पनाह। जिस हरमे पाक पर अबरहा पर न मार सका, जिस हरमे पाक पर करामता अत्याचारियों की सत्ता बाकी न रह सकी, उस हरमे पाक का इमाम लम्बे समय तक का इमाम काफिर रहे? खुदा की पनाह, हरमैन शरीफैन की रिकार्ड सेवा करने वाले बुरे हो सकते हैं? हरगिज नहीं।

आपसी मतभेद और लड़ान का अध्ययन (मुतालआ) करने से पता चलता है कि इस में बहुत कुछ गलत फहमी पर आधारित है जैसे कुछ अहले हदीस तकलीद को पसन्द नहीं करते तो कुछ इमामों की तकलीफ को शिर्क कहते हैं। भाई शिर्क तो जब हो जब इमामों को किताब व सुन्नत छोड़ कर शरीअत बनाने वाला मान कर उन की तकलदि (अनुकरण)की जाए। तकलीद करने वाले तो इमामों को शरीअत का शारिह् (शरीअत को समझाने वाला) मान कर उन की तकलीद करते हैं। अहले हदीस के भी 90 प्रतिशत अवाम सीधे हदीस व कुर्आन को न समझते हुए अपने उलमा की तकलीद ही में किताब व सुन्नत से निकलने वाले अहकाम (आदेश) समंझते हैं अतः उन को चाहिये कि अगर वह इमामों की तकलीद को अच्छा नहीं समझते तो अपने अहले हदीस उलमा की तकलीद करें या इल्म हो तो किताब व सुन्नत को खुद समझ कर अमल करें लेकिन इमामों द्वारा शरीअत को समझने और उस पर अमल करने वाले मुकल्लिदीन को अपना भाई समझें इसी प्रकार इमामो की तकलीद

करने वालों को चाहिये कि वह अहले हदीस हज़रात का आदर करें, उन को अपना भाई समझे कि वह अपने इल्म के मुताबिक (ज्ञानानुसार) किताब व सुन्नत पर अमल करते है। इसी प्रकार बरेलवी उलमा कुछ देवबन्दी उलमा पर तौहीने रसूल का आरोप लगाते हैं। (अल्लाह की पनाह) जब कि देवबन्दी उलमा उन आरोपों का खण्डन करते हैं और साफ कहते हें कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की तौहीन करने वाला मुसलमान नहीं रह सकता। क्या इस के बाद भी उन पर आरोप लगाना उचित है। यह सच है कि बरेलवी उलमा के साथ आम मुसलमानों की एक बड़ी संख्या है जिस का कारण यह है कि अवाम बहुत सी बिदआत (दीन में नई बातों) में मुबतला हैं जैसे प्रचलित मीलाद, फातिहा, उर्स, कव्वाली, कबरों पर चढ़ावा मजारों पर मेला, कबरों पर बाजों के साथ कव्वाली, तअ़जिया दारी, नौहा, मातम, तअ़जियों पर चढ़ावा चढ़ाना, मौत पर तीजा, चालीसवाँ, बर्सी करना इन सब का इस्लामी शिक्षाओं में कहीं नाम व निशान नहीं है यह बात बरेलवी उलमा भी मानते हैं, लेकिन इन में से बहुत सी बातों को बिदअ़ते हसना (अच्छी नई बात) कह कर उसे बुरा नहीं कहते, इन में से बाजा, गाजा और तअ़जिया दारी को बरेलवी उलमा भी बुरा कहते हैं लेकिन अपने आदमियों को बाजा गाजा और तअजिया दारी से न रोकते हैं न रोक पाते हैं, बस वह अपने अवाम को रोकते हैं तो सिर्फ इस बात से कि देवबन्दियों से दूर रहो और उन को काफिर कहो जब कि देवबन्दी उलमा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस "कुल्लु बिदअतिन जलालतुन" दीन में हर नई बात पथ भ्रष्टता (गुमराही) है और हदीस "कुल्लु जलालतिन फिन्नार" हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है के अंतरगत हर बिदअत से रुकते और रोकते हैं इस लिये अवाम देवबन्दियों से कटते और बिदआत व खुराफात से राजी रहने वाले बरेलवी उलमा से जुड़ते हैं। लेकिन पढ़ा लिखा वर्ग (तबका) देवबन्दियों ही को अच्छा समझता है। अगर बरेलवी उलमा जरा तवज्जुह दें तो यह आपस की लड़ाई मेल मिलाप से बदल सकती है। वह अपनी तकरीरों में अपने अवाम को बताएं कि देवबन्दी लोग जो बिदआत से बचते और रोकते हैं तो वह हदीस पर अमल करते हुए ही ऐसा करते हैं अतः उन को बुरा न समझो उनके पास उस की दलीलें हैं जिन से हम लोग सहमत नहीं हैं इतनी बात पर उन का बाई काट करना उचित नहीं है।

हम सब उसूली अकाइद (मौलिक विशवास ईमान मुफस्सल व मुजमल) बुन्यादी अअमाल (नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज्ज, सदका, कुर्बानी) मुआशरती तअ़ल्लुकात (सामाजिक व्यवहार : निकाह व तलाक आदि) में एक हैं तो क्या वजह है कि अनवाश्यक तथा इस्लाम में बढ़ाई हुई बातों के आधार पर एक दूसरे को इस्लाम से निष्कासित बता कर अपनी एकता को भंग करते हैं हमारे विद्वानों को चाहिये चाहे बरेलवी हों, देवबन्दी हों या अहले हदीस हों सब धोषित करें कि, कल्म–ए–तय्यिबा कल्म–ए–शहादत, ईमाने मुफस्स्ल, ईमाने मुजमल, फराइज, वाजिबात, निकाह, तलाक, वरासत जैसे इस्लाम की सभी अनिवार्य बातों में सहमत हैं तो सिर्फ इजतिहादी बातों में इख्ति–लाफ की बुन्याद पर लड़ान क्यों पैदा करें। अगर इजजिहादी मसाइल में एकता नहीं हो पा रही है तो अपनी अपनी तहकीक पर अमल करें और सब को अपना भाई समझें कि पारसपरिक एकता अत्यावश्यक है उस के बिना दुन्या व आखिरत दोनों जगह हानि है। अल्लाह तआला फरमाता है, अनुवाद : और अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ों नहीं कि फिर बुजदिली (कायरता) करोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र (सन्तोष) करो बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। इस नाजुक दौर में आपस में मिल कर तथा एक हो कर सीसा पिलाई दीवार बन जाएं, नीज अपने अच्छे अखलाक से गैरमुस्लिम भाइयों को भी प्रभावित करें कि अल्लाह का हुक्म है, अनुवाद : जो लोग तुम से लड़े नहीं, न तुम को तुम्हारे घरों से निकाला, उन के साथ भला बरताव तथा न्याय के साथ सम्बन्ध रखने से अल्लाह तुम को नहीं रोकता।

(अल मुमतहिना पारा 28 की आयत 8)

❑❑

अपनी नियत का क़िबला ठीक कीजिये

दारूल उलूम के तालिब इल्मों से हज़रत नाज़िम नदवतुल उलमा का विचार जनक संबोधन

अज़ीज़ों और इल्मदीन के तालिबइल्मों!

अल्लाह तआला का हम जिस क़दर शुक्र अदा कर सकें हमें करना चाहिये और इसमें बिल्कुल कोताही नहीं करनी चाहिये कि उसने हम सबको बहुत बड़ी नेमत अता फ़रमाई है, सूरः फ़ातिहा हम रोज़ कितनी बार पढ़ते हैं और नमाजों में कितनी बार ज़बान से अदा करते हैं "कि ऐ अल्लाह हम सबको उन लोगों के रास्ते पर चला जिनपर तूने इनआम और इकराम किया, इनआम व इकराम का मतलब यह है कि दीन की दौलत अता फ़रमाया, कुर्आन करीम ने दीन की दौलत व नेमत को "नेमत" कहा है, "नेमत" यानी जिससे इन्सान को आराम व राहत और खुशी मिले, यानी खुदाएपाक ने हमको खुशी दी है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दीन को "नेमत" कहा है क्योंकि इससे बड़ी कोई खुशी नहीं हो सकती, और जिसको इन्सान नेमत समझता है यानी दुनियावी राहत व आराम, चैन की ज़िन्दगी, माल व दौलत की ज़ियादती, यह नेमत नहीं बल्कि खुदा की नाफ़रमानी के असबाब हैं, कुर्आन करीम ने उसको "नअमः" कहा है और यह कुर्आन की बलागत है कि जहाँ–जहाँ लोगों की दुनियावी खुशी और राहत को बयान किया है वहाँ "नअमः" कहा है और जहाँ–जहाँ अल्लाह की रज़ा और रसूल की महब्बत का तजकिरा है वहाँ "नेमः" का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है।

अज़ीज़ तलबा! आप ज़रा गौर कीजिये कि वह नेमत के रासते पर लाया नअमः का रास्ता नहीं दिखाया, आप यहाँ आए हैं तो "सिरातल लजीना अनअमत अलैहिम" के ज़ुमरे में शामिल होने के लिये आए हैं, "एहदिना" यानी हमको तौफ़िक़ अता फ़रमा, और जो मुकाम आप हासिल करने के लिये आए हैं वह "सिराते मुस्तक़ीम" (सीधा रास्ता) है, "सिराते मुस्तक़ीम" की तशरीह (व्याख्या) "अनअमता अलैहिम" है, यानी उन लोगों का रास्ता जिन पर तेरा इनआम हुवा कुफ़्फार को जो नेमत मिली उसको कुरआन ने "नअमः" कहा है, और मोमिन को जो नेमत मिली उसको "नेमः" कहा है, और फिर यह भी दुआ करते हैं "उन लोगों का रास्ता नहीं जिन पर आप का ग़ज़ब नाजिल हुवा और वह गुमराह हो गए", तो नेमत माँगने के साथ उसके विपरीत से बचने की भी दुआ करते हैं, हर नमाज और हर रकअत में यह दुआ करते हैं, मक़सद यह है कि ग़रज़ सामने रहनी चाहिये, जब ग़रज़ सामने रहती है तो इन्सान हिम्मत व हौसला और मेहनत से काम लेता है।

हज़रत मौलाना ने तलबा से एखलासे नियत पर ज़ोर देते हुवे फ़रमाया कि पहली बात तो यह है कि हमारी नियत दुरूस्त हो नमाज की हर रकअत में "ऐ अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा" पढ़ते हैं मगर ध्यान नहीं रहता कि "एसीधे रास्ते" पर चलें, इस लिये हमारा ध्यान और तवज्जुह एक मक़सद पर मरकूज़ (केन्द्रित) हो, यह न हो कि कानून और इन्तिज़ाम के दबाव के तहत काम कर रहे हैं, होना तो यह चाहिये कि कोई कहे या न कहे हमें अपना काम मुक़र्ररह (निश्चित) वक़्त पर तुन्दही (तत्परता) के साथ अनजाम देना चाहिये, जो चीज़ आपको हासिल करनी है उसकी फिक्र खुद करें, किसी को तवज्जुह दिलाने और टोकने की ज़रूरत ही न पड़े।

मौलाना अब्दुल बारी नदवी (रह0) का वाकिआ बयान करते हुवे फ़रमाया कि एक मरतबा मौलाना मरहूम जो नदवे के जीनिअस फाज़िलों और हज़रत थानवी के खुलफ़ा में थे, के पास एक उस्ताज गए, मौलाना ने एक काम के लिये फ़रमाया तो उन्होंने कहा इस वक़्त एक जिम्मेदारी है, फ़रमाया क्या, कहा इम्तिहान हाल जाना है तो पूछा आप वहाँ क्या करेंगे, जवाब दिया, तलबा की निगरानी करेंगे कि वह नकल न करें, इस पर मौलाना मरहूम ने कहा

कि आप तलबा की निगरानी करेंगे कि वह नक़ल न करें, ऐसे मदरसों को बन्द कर देना चाहिये, जहाँ तलबा–ए–दीन धोखा देना सीखते हैं, और कोई मक़सद न हो, तो सच्ची बात यह है कि आपकी निगरानी की ज़रूरत ही न पड़े, बल्कि आपको यह शिकायत हो कि हमारी निगरानी क्यों हो रही है? क्या हम पर भरोसा नहीं है? आप इसको अपनी तौहीन और बेइज़्ज़ती समझें मगर ऐसा कहाँ हो रहा है?

तो सोचने की बात यह है कि हम दीनी मदरसे में क्यों आए हैं, यहाँ आप दीन सीखने के लिये आए हैं और जब दीन को अपना नसबुल ऐन (उद्देश्य) बनाएंगे तो दुनिया तो उसके साथ मिलेगी ही, लेकिन अगर आपने नबी की खुसूसियात (विशेषतायें) मदरसों में रहकर हासिल न की तो तो जब आप यहाँ से जायेंगे, दुनियादारों की तरह झूठ बोलेंगे धोखा देंगे, ख्यानत करेंगे, तो आपका और उन मदरसों का क्या एतिबार रहेगा, लोग कहेंगे कि यह इतने साल एक खास माहौल में रहकर आये मगर हम में और उनमें कोई फर्क़ नहीं है।

अज़ीज़ो! आप यहाँ "एहदिनस–सिरातलमुस्तकीम" की तामील में आए हैं कि ऐ अल्लाह वह रास्ता अता फ़रमा जो नेमत का रास्ता है, जो ख़ुदा की रज़ा के मुताबिक हो दुनियादारों की नेमतों को "नअ़मः" कहा गया है कुर्आन में है "व नअ़मतिन कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन" यानी खूब मजे ले रहे थे, और जब ख़ुदा का अजाब आया तो सब हवा निकल गई, लेकिन आप इस कदर जबान से इस आयत को दुहराते हैं और भूल जाते हैं और काम "नअ़मः" वाले करने लगते हें, यही वजह है कि अल्लाह ने इन्सान को "अशरफुल मख़लूकात" (उच्चतम सृष्टि) बनाया है और उसको तमाम सृष्टि पर प्रमुखता दी है, जानवर को खाने से मतलब है उसको झूठ, धोखा, गुनाह, रिश्वत और खुद से कोई मतलब नहीं, जहाँ मौक़ा मिला मुंह मार दिया दूकान पर गया न कुछ देखा न पूछा बस खाना शुरू कर दिया, यही काम अगर इन्सान करने लगे तो फिर जानवर और इन्सान में क्या फर्क़ रहे जायेगा, जबकि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अक्ल व इल्म दिया है, और दो ऐसी नेमतें हैं जो जानवरों को नहीं मिली है, इल्म दूसरों के तजुरबात से फाइदा उठाने को कहते हैं, और अक्ल से आदमी शिनाख्त करता है, अच्छे और बुरे का फर्क करता है, यह दो नेमतें इसलिये दी हैं कि इन्सान उनसे काम ले, यूँ ही बिलावजेह उनको नहीं दिया है, कोई चीज अल्लाह ने तफरीह और बेकार के लिये नहीं बनाया है, कुर्आन में है "क्या तुमने यह समझ लिया है कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है और तुम हमारी तरफ लौटाए नहीं जाओगे" यह समझना कि हम बेकार पैदा कर दिये गये, खालिस दुनियादारों का तरीका है, कुछ ऐसे भी लोग इस दुनिया में हैं जिनको यह नहीं मालूम हक हम क्यों पैदा किये गये, यह लोग अपने को बेकार समझते हैं, जबकि अल्लाह ने कस्द व इरादे के साथ इन्सानों को पैदा किया और जानवरों से अफ़ज़ल व आ़ला मुक़ाम अता किया और बरतरी के लिये इल्म व अक्ल दिया, अब उसका काम है कि वह फाइदा उठाए और अपनी ज़िन्दगी को कारआमद बनाये।

मौलाना ने फ़रमाया कि हमको हर वक़्त मकसद पर ध्यान देना चाहिये, ध्यान न देने से काम बेकार हो जाता है, मिसाल के तौर पर आपको ट्रेन से सफर करना है तो आप उसके लिये किस कदर तय्यारी करते हैं, पहले से गाड़ी का निश्चित समय मालूम करते हैं, और उससे कुछ कब्ल ही सारा सामान तय्यार करके निकल जाते हैं, अगर आप ध्यान न दें तो गाड़ी चली जायेगी और नुकसान हर हाल में आप का ही होगा, तो ध्यान करें कि आप यहाँ क्यों आये हैं, और यहाँ से निकल जाने के बअ़द फिर आप को यह नेमत नहीं मिलेगी, कुफ्फार का हाल कुर्आन ने यूँ बयान किया है "ऐ मेरे रब दुनिया में मुझे वापस कर दीजिये ताकि नेक अमल करूं, तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा "हरगिज़ नहीं, यह खाली अलफाज हैं," यानी अब तुम्हें मौका नहीं दिया जायेगा जब मौका था तो उससे फाइदा नहीं उठाया और बेकार कामों में लगे रहे, अब तो सजा भुगतनी है।

अज़ीज़ तलबा! ख़ुदा हमको

हुक्म देता है और रास्ता भी बताता है और तौफीक देता है, इसलिये कि कोई माँ के पेट से सीख कर नहीं आता, हम भूल में हैं, "सिराते मुस्तकीम सीधा रास्ता खुदा ही देगा, जब बन्दा एखलास के साथ माँगता है तो खुदा देता है।, अल्लाह के बाज बन्दे वह है जो अल्लाह से दुनिया व आखिरत दोनों जगह की भलाई माँगते है और जहन्म के अजाब से पनाह चाहते हैं, इन हजरात को खुदा दुनिया और आखिरत दोनों जगह देता है, और कुछ ऐसे लोग हैं जो सिर्फ दुनिया के लिये माँगते हैं, तो आखिरत में उनको कुछ नहीं मिलेगा। एक इन्सान और जानवर में यही फर्क है कि खुदा ने इन्सान को इल्म और इक्ल दिया है और जानवर इससे महरूम (वंचित) है, वरना उसकी क्या गलती है, वह जो कुछ कर रहा है उसको अक्ल ही नहीं कि यह सही है या गलत, इसलिये दुआ यही माँगी गई है कि दुनिया व आखिरत दोनों जगह अच्छी चीज दे, हमारे इन मदरसों में यही ताअलीम होती है, कुर्आन व हदीस में यही तअलीम दी गई है, अगर हम रात व दिन कुर्आन व हदीस पढ़ें और फाइदा न उठायें तो इसका क्या हासिल, इन उलूम का फाइदा यह है कि आप खुद अमल करें और कौम के मुरब्बी, हादी, मुसलेह और मुअल्लिम बन कर निकलें, खुद अपने अमल के लिये थोड़ा इल्म भी काफी है, इस कदर किताबें पढ़ने और इल्म हासिल करने का मकसद यह है कि आप को दूसरों की रहबरी करना है।

अकलमन्द वही है जो अपना जाइजा लेता है, इसलिये हर शख्स अपना जाइज़ा ले कि हम किस कदर फाइदे और नुकसान में हैं और यह देखें कि हम किस कदर "अबस" (बेकार) में हैं, आपके पास हर सवाल का जवाब हो कि हम यह काम क्यों कर रहे है? आखिर इसका मकसद क्या है? वालिदैन, रिश्तेदार, भाई बहन और अज़ीज़ व अकारिब को छोड़कर, तमाम राहतों को तजकर, यहाँ क्यों पड़े हुए हैं, आखिर इसका मकसद क्या है? और इसका फल हमको क्या मिलेगा? खुद से यह सवाल करें।

और यह हमेशा याद रखये कि जो वक़्त आपके लिये मुफीद नहीं है वह "अबस" बेकार है, हर शख्स यह देखे कि कितना "अबस" कर रहे हैं और किस कदर हमारे अन्दर गंभीरता है, आप यहाँ पाँच साल तअलीम हासिल करते हैं और फाइदा सिर्फ एक साल होता है तो गोया चार साल आपने बरबाद कर दिये, एक साल ही मेहनत से पढ़ लेते तो वह इल्म भी हासिल हो जाता और चार साल भी बच जाते अगर आप अपना जाइजा लें तो यह हक़ीक़त खुल कर सामने आ जाएगी। नियत पर जोर देते हुवे चेतावनी दो कि आप नियत ठीक कीजिये और बेकार कामों से बचये, दारूल उलूम के जिम्मेदार, असातिजा कारकुनान अपना काम कर रहे हैं आप को फाइदा पहुँचाने की कोशिश कर रहे है, अगर आप काबिल होंगे और किसी लाएक हो गये तो फाइदा किसका होगा? इसलिये हर वक़्त अपना जाइजा और इम्तिहान लीजिये कि हम यहाँ क्यों आएं हैं? दर्जे क्यों जा रहे हैं? किताबें क्यों पढ़ रहे हैं? निजाम की पाबन्दी क्यों कर रहे हैं? और फिर इस सब का साल के आखिर में फाइदा हुवा या नहीं, एक ताजिर या कोई भी काम का आदमी शाम के वक़्त हिसाब लगाता है कि दिन भर काम किया, फाइदा हुवा या नहीं? आप जरा सोचये कि यहाँ क्यों आए? किसी कारखाने, कालिज, यूनीर्वसिटी या कहीं और चले जाते, मदरसा क्यों आएं, इसका मतलब है "एहदिनस–सिरातल मुस्तक़ीम" (ऐ अल्लाह सीधा रास्ता दिखा) पर अमल करना आसान हो तो यह खुदा का कितना बड़ा एहसान है, खुदा ने जो मौका दिया है अगर फाइदा न उठाएं तो अपना नुकसान है, और कोई आप को मजबूर नहीं कर सकता।

अख़ीर में हज़रत वाला ने दर्द सोज के साथ फ़रमाया कि आप रात दिन के कामों का जाएज़ा लीजिये, बेकार कामों में वक़्त बिल्कुल बरबाद न कीजिये, अल्लाह ने अक्ल दिया ही इसलिये है कि उससे फाइदा उठाएं, खुदा ने जानवरों को अक्ल नहीं दिया, अल्लाह ने जब अक्ल और इल्म दिया है और

शेष पृष्ठ 16

तबलीग़ी जमाअत

- इदारा

एक साहिब ने एक किताबचा (पुस्तिका) भेजा जिस में उन्होंने ज़माअत के काम के फैलाव को विश्व स्तर पर स्वीकार किया है और इस काम में करोड़ों लोगों का लगा हुआ माना है तथा उन की मेहनतों और मुजाहदों और अपने खर्च पर वक्त लगाने को माना है। परन्तु अफसोस उन्होंने यह समझाते हुए कि अकीदा सहीह न होने पर सारे अअमाल अकारत जाते हैं, तबलीग़ी ज़माअत के लोगों को कहा है कि इन के अकाइद दुरूस्त नहीं हैं। "नअजुबिल्लाहि मिन ज़ालिक" दलील में फजाइल अअमाल की कमज़ोर रिवायतों और कुछ बुजुर्गों के किस्सों को पेश किया है। यह न सोचा कि इबरत और सबक के लिये अगर गढ़े किस्से और मिसालें पेश की जाएं तो उस से अकीदा कैसे खराब होगा, अकीदा ईमाने मुफस्सल व मुजमल से बनता है किस्से इबरत व सबक के लिये होते हैं न कि अकीदा बनाने के लिये इसी तरह फजाइले अअमाल में कमजोर हदीसें अच्छे अअमाल की तरग़ीब के लिये पढ़ी जाती हैं। यह अच्छी बात है कि कमजोर रिवायातों से बचा जाए लेकिन उन का पढ़ना नाजाइज तो नहीं है। अलबत्ता गढ़ी हुई रिवायतों का पढ़ना सुनना दुरुस्त नहीं सिवाए इस के कि उन का रद किया जाए। फजाइले अअमाल में तमाम रिवायतों के हवाले दर्ज हैं, एअतिराज करने वाले को उसूले हदीस के लिहाज से उनकी हैसीयत साबित करना चाहिये, हजरत शैख इन्सान ही थे अगर उन से चूक हुई है और गढ़ी रिवायत किताब में आ गई है तो गढ़ी हुई साबित होने पर उस का पढना बन्द कर दिया जाएगा, मगर यह बात तबलीग़ी ज़माअत के उलमा से हमदर्दी के साथ कहना चाहिये।

वैसे तबलीग़ी ज़माअत के बड़ों को इस का एहसास हुआ है कि फजाइले अअमाल की कमजोरियों पर कुछ अपने लोगों को भी एअतिराज हैं चुनांचि इस तरफ तवज्जुह हुई है और जनाब मौलाना असअद साहिब ने मुन्तखब अहादीस का बेहतरीन मजमूआ तय्यार कर दिया है जो उर्दू में भी है और हिन्दी में भी, लेकिन चूंकि अवाम फजाइल अअमाल के आदी हो गये हैं इस लिये उसे छोड़ कर मुन्तखब अहादीस अपनाने में कुछ वक्त लगेगा। कुछ उलमा फजाइले अअमाल पर तहक़ीकी तदवीन का काम कर रहे हैं। मुअतरिज साहिब को अगर अपने करोड़ों भाइयों से हमदर्दी है तो वह ज़माअत के कामों में हिस्सा लें और अवाम के जजबात का लिहाज करते हुए हिकमत से मुन्तखब अहादीस को रिवाज दें।

मुअतरिज साहिब का एक एअतिराज यह है कि तबलीगी अमाअत वाले कुर्आन के दर्स को पसन्द नहीं करते न उस को चलने देते हैं। ऐसा हरगिज़ नहीं है। तबलीगी ज़माअत के उलमा की तकरीरें उमूमन आयत "कुन्तुम खैर उम्मतिन" (3:110) या वल्तकु-म्मिन्कुम उम्मतुन (3:104) या सुरंतुल अस्र या कुर्आन मजीद की कोई आयत पढ़ कर ही शुरूअ होती हैं, क्या यह कुर्आन से गुरेज है? हरगिज़ नहीं। मरकजे तबलीग लखनऊ में इतवार को दर्से कुर्आन का मअमूल रहा जिस में बरसों हजरत मौलाना अली मियां, हजरत मौलाना मु0 मंजूर नोमानी, मौलाना मु0 आरिफ संभली (इन सब पर अल्लाह की रहमत हो) के दर्स होते रहे हैं। अस्ल में तबलीगी ज़माअत की दअवत का काम हर पढ़ा लिखा आसनी से कर सकता है जब कि कुर्आन के दर्स के लिये अच्छे आलिम की जरूरत है जो अरबी जबान अच्छी तरह जानता हो और उसूले तफसीर से खुसूसन खास व आम, मुतलक व मुकैय्यद, नासिख व मन्सूख और शाने नुजूल से वाकिफ हो वरना उस के दर्स से भारी नुक्सान का डर है। फिर तबलीगी ज़माअत अपने मकसद में सद फीसद कामयाब है, खामियों की इस्लाह उस के उलमा से होती रहेगी। शेष पृष्ठ 31

अक़ीदा

– शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०)

हजरत बड़े पीर शैख़ सय्यिद अब्दुलक़ादिर जीलानी रहमतुल्लाही अलैहि अपनी किताब गुन्यतुत्तालिबीन में लिखते है, अनुवाद :

"हमारा अक़ीदा है कि बन्दे के तमाम अच्छे बुरे अअ़माल (कर्मों) का पैदा करने वाला अल्लाह ही है। परन्तु यह कदापि नहीं कि "अल्लाह तुम्हें खुद गुनाह करने को कहे उस ने तो गुनाह पैदा किया तो साथ ही तकदीर भी बना दी। इस बात को एक आलिम ने इस शिअ़र (पद्य) में समझाया है :

उसी ने किया ख़ल्क़ हर खैर व शर	भलाई बुराई को पैदा किया
नहीं फ़िअ़ले बद से वो राजी मगर	मगर ना बुराई से राज़ी हुआ

(सम्पादक)

हर एक के मुकद्दर में जितनी रोजी है अल्लाह ने उसे बाँट दिया है उस से कम या ज़ियादा कोई नहीं ले सकता, न उसे कोई रोक सकता है। कल के लिये जो रोजी मुकर्रर है उसे आज कोई नहीं खा सकता, न किसी की रोजी मुन्तकिल (परिवर्तित) हो कर किसी और के पास जा सकती है। हराम खाने वाला हो या हलाल खाने वाला हो अल्लाह दोनों को रोजी देता है ताकि वह अपने दिन पूरे कर सके इस का यह मतलब नहीं कि हराम खाना मुबाह़ (बैध) है।

अगर कोई शख्स कत्ल कर दिया जाए तो जान लेना चाहिये कि उस की उम्र उतनी ही थी यह न समझें कि अभी उस की उम्र बाकी थी। अगर कोई शख्स पानी में डूब कर मर जाए या दीवार के नीचे दब कर या पहाड़ से गिर कर मर जाए या कोई दरिन्दा (हिंसक पशु) उससे खा जाए तो इन तमाम सूरतों में यही जानना चाहिये कि उस की उम्र उतनी ही थी और उस की तक्दीर में अल्लाह ने यही लिखा था।

मुसलमानों के दिलों में अल्लाह का नूर दाख़िल होता है और काफिर गुमराह (पथ भ्रष्ट) होते हैं तो यह बातें अल्लाह ही की शक्ति तथा वश में हैं किसी और का इन पर कुछ इख्तियार नहीं, यह सब काम अल्लाह ही के हैं। उसकी सिफत (गुणों) में शामिल हैं। उस के मुल्क में कोई दूसरा शरीक नहीं। उस ने बन्दों को नेकी कमाने की हिदायत (निर्देश) दी है और अपने अहकाम (आदेश) अपनी मर्जी के मुताबिक बयान कर दिये हैं कि यह काम अच्छे हैं और यह काम बुरे हैं।

ऐसा करोगे तो सवाब पाओगे और ऐसा करोगे तो अजाब (दण्ड) पाओगे। जैसा तुम करते हो वैसा ही बदला दिया जाएगा जैसा करोगे वैसा ही सवाब पाओगे। दोज़खियों से पूछा जाएगा तुम्हें कौन सी बात दोजख में लाने का सबब (कारण) बनी? वह जवाब देंगे हम ना नमाज पढ़ते थे, ना गरीबों को खाना खिलाते थे। अल्लाह फरमाएगा यह वही आग है जिस का तुम्हें यक़ीन न था तुम इसे झुठलाते थे। यह उन्हीं अअ़माल (कर्मों) का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने पहले भेजा। (अर्थात तुम्हारे कर्म) इस विषय में ऐसी और रिवायतें भी हैं। (देखें गुन्यतुत्तालिबीन उर्दू पृष्ठ 156 तथा अरबी पृष्ठ 64)

❑❑

मदरसा बोर्ड हमारे दीनी मदरसों के लिये मुनासिब नहीं

- मौ० मु० राबे हसनी नदवी

मदरसों के लिये बाकायदा बोर्ड बनाकर मदरसों को उसके मातहत करने की जो स्कीम हुकूमत के विचाराधीन है, वह स्कीम हमारे दीनी मदरसों के लिये साजगार (अनुकूल) नहीं है। क्योंकि हमारे इन दीनी मदरसों का बुनियादी मकसद दीनी उलूम में माहिर उलमा (विद्वान) तैयार करना है ताकि वह मुसलमानों के धार्मिक मामलों की जिम्मेदारी संभाल सकें। और मुसलमानों का धार्मिक मार्गदर्शन और धार्मिक सरपरस्ती का कर्तव्य–निर्वाह कर सकें। विशेषकर इस देश में जहाँ मुसलमान अल्पसंख्यक हैं, लेकिन बड़ी तादाद में हैं। और उन की यह महत्वपूर्ण मिल्ली (सामुदायिक) जरूरत है कि उन का धार्मिक संरक्षण भी हो सके, और वे अपने दीन के मामलों से वाकिफ़ और उन पर कार्यशील हो सकें। इन मदरसों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र स्कूल–कालेज में शिक्षा प्राप्त करने वाले मसुलमान छात्रों के मुकाबले में ज्यादा से ज्यादा चार पाँच प्रतिशत हैं। और मिल्लत (समुदाय) की दीनी जरूरत के सामने छात्रों की यहाँ संख्या काफी से भी कम है और इस को और कम नहीं किया जा सकता। रही उन की आर्थिक समस्या तो इन मदरसों में पाठयक्रम और कार्यक्रम ऐसा रखा जाता है कि यहाँ से पढ़कर निकलने वालों की आर्थिक जरूरत आवश्यकतानुसार आसानी से पूरी होती है। और उन को बेकारी से साबेकः नहीं पड़ता, जिस का सामना स्कूल कालेज से पढ़कर निकलने वालों को करना पड़ता है। इसी लिये हमारे बड़े तमाम दीनी मदरसे इस स्कीम से अलग रहना मुनासिब समझते हैं। ताकि वे इन मदरसों के लक्ष्य और उद्देश्य के अनुसार अपने मामले स्वतंत्र रूप से अंजाम दे सकें। देश का संविधान इन को इसका हक देता है। हमारे यह दीनी मदरसे धार्मिक विशेषताओं के हामिल (बोझ उठाने वाला धारक) अनुभवी विद्वानों के संरक्षण में चलते हैं, और आम मुसलमानों की सहायता से इन को खर्च मिलता है। और इन के टीचर्स आखिरत (परलोक) के बदले की खातिर कम तनख्वाहों पर खुश और राजी रहते हैं। हुकूमत की सरपरस्ती व इमदाद (सहायता) की व्यवस्था चाहे इस बात के आश्वासन के साथ हो कि मदरसा के मामलों में मदरसा के जिम्मेदारों को आजादी रहेगी, लेकिन हुकूमत जब खर्च (व्यर्य) की व्यवस्था करेगी तो उस को किसी न किसी दायरे में दखल देने का हक हासिल होगा। और

- एम० हसन अंसारी

अगर यह न भी हो तो हुकूमत बदलने पर ऐसा होने पर क्या बात रोक सकती है। मिसाल के तौर पर मदरसों के राज्य स्तरीय बोर्डों के मामलों को देखा जा सकता है। इन सूबाई बोर्डों की तरफ से मदरसों की प्रबन्ध समितियों को आजादी भी दी हुई है, लेकिन हुकूमत की मर्जी और नामर्जी (इच्छा और अनूइच्छा) इन को समय–समय पर मजबूर भी करती रहती है। सहायता की वसूली और वेतन के मिलने में कठिनाइयाँ भी होती हैं और रिश्वत का सहारा भी चलता है, इस के आधार पर टीचर्स की कारकर्दगी में छूट भी हासिल हो जाती है पढ़ाने वाले को पढ़ाने की कोई खास पाबन्दी नहीं रहती, और स्टूडेन्टस को पढ़ने की फिक्र नहीं करनी पड़ती। निर्धारित पाठयक्रम में इम्तेहान दे लेना काफी हो जाता है। और मदरसों का दीगर नज्म व इन्तेजाम भी ढीला रहता है। यह सब बातें सामने आती रहती हैं। इन सब कारणों से इन के स्टूडेन्टस का ज्ञानार्जन नाकिस रहता है और वह उलमा (विद्वान) पैदा नहीं होते जिन की जरूरत है।

तनख्वाहों की वसूली में अव्यवस्था के कारण समय–समय टीचर्स अपने गरिमामये चेहरों के

साथ असेम्बली के बाहर विरोध प्रदर्शन और हड़ताल करते हुए नज़र आते हैं। इन के धरना पदर्शन के चित्र समाचार पत्रों में छप कर शर्मिन्दगी पैदा करती हैं कि चन्द माह से तनख्वाह नहीं मिली, इस की खातिर यह प्रदर्शन हो रहा है।

मदरसें के पाठयक्रम में भी ऊपर की सलाह को कबूल करना होता है जिस से तालीम के दीनी मकसद पर असर पड़ता है, लेकिन गवर्नमेन्ट से मदद मिलने की शर्म में इन को यह कबूल करना पड़ता है।

यह तो उन मदरसों की बात हुई जो सूबाई मदरसा बोर्ड से जुडें हैं, रहे हमारे आजाद और खुदमुख्तार दीनी मदरसे तो यह असलन मुसलमानों की दीनी दरसगाह (विद्यालय) होने के साथ उन के धार्मिक दीक्षा विद्यालय की भी हैसियत रखते हैं जिन के जरियः मिल्लत के दीनी मसअलों व मामलों में सुझाव–सलाह व रहनुमाई (मार्गदर्शन) की डयूटी भी अंजाम पाती है। देश में जहाँ, मुसलमान अल्पसंख्यक हैं इस्लामी फिक्र व मिजाज की हिफाज़त इन्हीं मदरसों के जरियः हो रही है। और यह उन के आजाद व खुदमुख्तार होने की बिना पर है। वह अगर राजकीय अथवा अर्द्धशासकीय छतुरी के नीचे ले आये जायेंगे तो यह दीनी उलूम का सिलसिला आवश्यकतानुसार और मसलहत के अनुसार चलाने के काबिल न रह सकेंगे इस लिये हमारे बड़े मदरसे के काइम करने और चलाने वालों ने शुरू से यह तय कर रखा है कि वह तत्कालीन हुकूमत से माली मदद न लेंगे, और न उसकी सरपरस्ती में जाना कबूल करेंगे। आम मुसलमानों की छोटी–छोटी इमदाद पर ही बस करेंगे। तनख्वाहों की कमी को आखिरत के बदले की खातिर बर्दाश्त करेंगें

संविधान की धारा 30 के तहत किसी भी अल्पसंख्यक को अपनी संस्थायें कायम करने, बढ़ाने और इस की व्यवस्था को कायम रखने का हक है। इसी दफा की बुनियाद पर यह मदरसे आजादानः काम कर रहे हैं। हमारे जो दानिश्वर मदरसा बोर्ड को पसन्द कर रहे हैं उनकी नजर टीचर्स की तनख्वाहों के बढ़ने पर है, वह उन की तरफ से टीचर्स की हमदर्दी जरूर है लेकिन उन्होंने बोर्ड के तहत आने वाले मदरसों में तालमी और दीनी मकसद का जो हाल बन रहा है वह नहीं देखा। और यह कि दीन की रक्षा और सशक्तिकरण (तकवीयत) के मुकाबले में आर्थिक लाभ को प्राथमिकता देना मुनासिब न होगा। दीन की रक्षा और उसका ससम्मान और आजादाना किरदार आर्थिक अभिवृद्धि (माली इजाफ़ा) की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। यह गैरों के सामने कासागदायी (भीख माँगना) करने के साथ ज़मा नहीं हो सकता। और यह भी देखने की जरूरत है कि हमारे मदरसों की छात्रसंख्या स्कूल–कालेजों की छात्र संख्या के मुकाबले में चार प्रतिशत है। स्कूल कालेजों की छात्र संख्या 94–95 प्रतिशत है। उन की जो कठिनाइयाँ हैं उन की चिन्ता पहले की जानी चाहिये थी, उन को मान्यता प्राप्त करने और ग्रान्ट लेने में जो कठिनाइयाँ होती हैं उन की अनदेखी कर के, सारी चिन्ता दीनी मदरसों की तरफ हो रही है, ऐसा क्यों है? यह बात भी देखने की है जब कि हुकूमत से हमारा कोई मुतालबा (माँग) भी नहीं है।

❑❑

तबलीग़ी ज़माअत

लेकिन कुछ लोग कुर्आन के दर्स में तबलीगी ज़माअत को बे जरूरत बताने लगते हैं जाहिर है ऐसे दर्स को तबलीगी वाले जरूर ना पसन्द करेंगे।

मुअतरिज साहिब को मशवरा है कि अगर वह कुर्आन का इल्म रखते हैं तो ज़माअत के मुफीद काम से लग जाएं और ज़माअत के कुछ बासलाहीयत लोगों को अलाहदा कुर्आन का दर्स इस तरह दें कि वह तबलीगी ज़माअत के कामों में खामियों की इस्लाह के साथ और सरगर्मी से हिस्सा लें।

अगर मुअतरिज साहिब के नजदीक तबलीगी ज़माअत का काम बे फाइदा है इसे बन्द होना चाहिये उन के एअतिराजात का यही मकसद हो तो हम बस उन के लिये हिदायत की दुआ करते हैं। अल्लाह हम सब को सिराते मुस्तकीम की हिदायत दे। आमीन!

❑❑

हैवानी ग़िज़ाएं (माँस सम्बन्धी आहार)

फ़ौज़िया

हैवानी ग़िज़ाऐं हमारे जिस्म की परवरिश करती हैं, गोश्त पोस्त रग पटठों के बनाने में काम आती हैं, नीज़ जिस्म को ताकत देती और हरारत पैदा करती हैं, अब चन्द हैवानी ग़िज़ाओं का मुख़तसरन बयान किया जाता है :

गोश्त

गोश्त एक उमदा मुकव्वी ग़िज़ा है इस में अज्ज़ाए लहमी (प्रोटीन्ज़) ज़ियादा होते हैं नीज़ चरबी होती है और नमकयात भी होती हैं अजज़ा–ए–लहमीया के ज़ियादाह होने की वजह से ये बदन को ग़िज़ाइयत देता है नीज़ बदन में कुव्वत व हरारत पैदा करता है।

इस मुलक में मुखतलिफ जानवरों का गोश्त खाया जाता है, उनमें से बकरी, भेड़, दुमबा, मुरग़, तीतर, बटेर का गोश्त ज़ियादा इ़स्तिअमाल होता है। चिड़यों का गोश्त बकरे के मुकाबले में जूद हज़्म है नीज़ परिन्दों का गोश्त लतीफ होने की वज़ह से ज़ियादा अच्छा समझा जाता है।

जिस जानवर का गोश्त खाया जाए वह तनदुरूस्त होना चाहिये, बुढ़े और बीमार जानवरों का गोश्त खाने से आदमी बीमार हो जाता है, गोश्त को खूब अच्छी तरह पकाया जाये, जो गोश्त पका कर अच्छी तरह न गलाया गया हो उसके खाने से हाज़मा खराब हो जाता है दसत आने लगते हैं और आँतों में केंचवे कदुदाने पैदा हो जाते हैं।

खाली गोश्त बराबर ज़ियादा अरसे तक खाते रहना भी मुनासिब नहीं है, इसके साथ सबज़ तरकारियाँ पकायी जाएं और इसके खाने में एतिदाल से काम लिया जाए ज़ियादा गोश्त खोरी से गठिया वगैरा कई बीमारियाँ पैदा हो जाती है।

मछली

मछली का शुमार अहम ग़िज़ाओं में है अगरचि यह तकरिबन हर जगह खाई जाती है, लेकिन बंगाल व बिहार के बाशिन्दों के लिये यह निहायत जरूरी है मछली का गोश्त भी दूसरे जानवरों के गोश्त के मानिन्द बदन को गिजाइयत देता और इस में कुव्वत व हरारत पैदा करता है। यह निहायत लजीज़ होता है और जल्द हज़म हो जाता है।

मछली हमेशा ताज़ा खाना चाहिये ताज़ा मछली सख्त होती है अगर उसको हाथ पर रखा जाये तो उसकी दुम नीचे नहीं गिरती और उसके गलफड़े खोल कर देखने से सुर्ख दिखाई देते हैं, इस के बरखिलाफ जो मछली देर की पकड़ी हुई होती है वह खराब हो जाती है उस में सड़ान्ध आने लगती है। उसकी आँखों में चमक और गलफड़ों में सुरखी नहीं रहती और न उसमें सख्ती बाकी रहती है, ऐसी खराब मछली के खाने से क़ै दस्त आने लगते हैं इसके अलावा यह बात भी याद रखनी चाहिये कि जोहड़ और तालाब की मछलियों से दरयाओं और नदयों की मछली अच्छी होती है। तजरिबे से मालुम हुआ है कि मछली खा कर दूध पीना या दुध पीकर मछली खाना मुनासिब नहीं है इससे बरस (फुलभरी) और जुज़ाम (कोढ़) जैसी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।

अंडा

अंडा निहायत सुवादिष्ट जूद हज्म शक्तिशाली ग़िज़ा है, इस से खून बहुत बनता है, जिन पर परन्दों का गोश्त खाया जाता है उन्हीं परन्दों के अंडे भी खाये जात हैं, लेकिन उनमें सबसे बेहतर मुरगी का अंडा है, उसमें बदन का गोश्त पोस्त पैदा करने वाले अजजाए लहमीया (पुरूटेन्ज़) ज़ियादा मिकदार में होते हैं, अथवा बदन मे ताकत और हरारत पैदा करने वाले रौगनी मवाद भी मिलते हें कुछ नमकयात भी होते हैं और पानी भी इसके अलावा सबसे बड़ी खुबी अंड़े में यह है कि वह निसबतन अपनी मिकदार से ज़ियादा ग़िजाइयत देता है इससे फुज़्ला बहुत ही कम बनता है।

अंडे को उबाल कर छीलते और जरदी सफेदी समेत खा लेते हैं, उसका सालन भी बनाते हैं, कुछ लोग कच्चे अंडे को तोड़ कर उसकी जरदी और सफेदी को पी जाते हैं, लेकिन उसके इस्तेमाल का सबसे अच्छा फाइदा बख्श तरीका यह है की अंडे को इतनी देर उबाला जाए कि उसकी सफेदी जम जाए और जरदी जमने के करीब पहुँच जाए यानी पूरे तरीके पर ना जमे इसके बाद उसपर जरासा नमक और काली मिर्च पिसी हुई छिड़क कर खा लिया हाए, अगर सिर्फ जरदी खाँए तो यह और भी ज़ियादा बेहतर है, ऐसा अंडा नीम बरिश्त (अध उबला) कहलाता है उबलते हुए पानी में अंडा तकरीबन डेढ़ मिनट तक उबाला जाए, अगर घड़ी ना हो तो इतनी देर तक उबाला जाए जितनी देर में मामुली रफ्तार से सौ तक गिना जा सकता है।

अंडे ताजे इस्तेमाल करना बेहतर है, अगरचि देहातों में उमुमन ताजा अंडे दसतियाब होते हैं, ताज़ा अंडे की फहचान के लिये यह बात याद रखनी चाहिये कि अगर उसको हाथ में लेकर रौशनी की तरफ देखें तो उसमें रौशनी की झलक नजर आती है, उसके अलावा अगर ताज़ा अंडे को पानी में डाल दिया जाए तो उसमें डूब जाता है उसके बरखिलाफ जो अंडा खराब हो जाता है न तो उसमें रौशनी की तरफ करके देखने से रौशनी नज़र आती है और न वह पानी में डूबता है, बल्कि पानी के ऊपर तैरा करता है।

दूध

दूध निहायत लतीफ, जूद हज्म ताकतवर गिज़ा है इस में जिसमें इन्सान की परवरिश करने वाले अजज़ा (प्रोटेन्ज) ताकत व हरारत पैदा करने वाले मवाद (कारबो हाइडरेटस और फैटस) काफी मिकदार में होते हैं, अथवा उस में पानी भी होता है और हयातीन भी, दूध में दूसरे गिज़ाइ अजज़ा के अलावा चूने (केलसीयम) की मिकदार दूसरी तमाम गिज़ाओं से ज़ियादा होती है और चूना बदन इन्सान की परवरिश के लिये निहायत जरूरी चीज है, यह जिस्म के नशो–नुमा और बढ़ोतरी में मदद देता है, हड्डियों की परवरिश करता और उनको मजबूत बनाता है रगों पट्ठों के बनाने और ताकत देने में भी काम आता है गरज़ यह कि दूध एक मुकम्मल गिज़ा है खासतौर से कमजोरों और बच्चों के लिये इस से बेहतर कोई गिज़ा नहीं है, यही वजह है कि बच्चे की पैदाइश के साथ ही कुदरत उसकी परवरिश के लिये माँ की छातियों में दूध पैदा करने लगती है।

बच्चे के लिये माँ का दूध ही सब से अच्छा है, दूसरे आदमी अपने हालात के मुताबिक बकरी या गाय या भैंस का दूध पी सकते हैं, बकरी का दूध बहुत हलका होता है, जल्द हज्म हो जाता है, लेकिन इस से एक खास किस्म की बू आती है, जिसे आम तौर पर पसन्द नहीं किया जाता, गाय का दूध अगरचि बकरी के दूध से भारी होता है, लेकिन यह भैंस के दूध से अच्छा समझा जाता है, भैंस के दूध में बकरी और गाय के दूध के मुकाबले में घी और पनीरी अजजा ज़ियादा होते हैं, इस लिये यह भारी होता है, लेकिन तन्दुरूस्त आदमियों के लिये बेहतरीन गिज़ा है।

दूध एक लतीफ ताकतवर गिज़ा है, इस लिये उसके दूहने में और रखने में उसकी लताफत का जरूरी ख़्याल रखा जाये, दूध दूहने से पहले ज़ानवर के थनों को अच्छी तरह धो लिया जाये, उसके बाद अपने हाथों को धो कर पाक साफ धुले हुए बर्तन में दूध दूहा जाए और जोश देकर पिया जाए, लेकिन अगर बिना जोश दिये पीना हो तो थनों से निकलते ही ताज़ा–ताज़ा पीना मुनासिब है, लेकिन गाय का दूध बगैर जोश दिये नहीं पीना चाहिये, क्यों कि कच्चे दूध में जरासीम की मौजूदगी का खतरा है।

दही, छाछ

दूध को ज़मा कर दही बनाते हैं और दही को बिलो कर मख्खन निकालने के बाद जो चीज बाकी रह जाती है, वह "छाछ" कहलाती है, दही और छाछ दोनों मुफीद गिज़ा हैं, छाछ से अगरचि मख्खन निकाल लिया जाता है जो एक ताकतवर चीज है ता हम छाछ बहुत मुफीद गिज़ा है

शेष पृष्ठ 10

तेरा बसेरा है कहाँ??

– नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

एक बार हकीम लुक्मान के पास "बुद्धि" आई तो हकीम लुक्मान ने पूछा तू कौन है और कहाँ रहती है? उसने कहा कि मैं "बुद्धि" हुँ और इन्सान के सर में रहती हुँ। दूसरी बार "लज्जा" आई तो पूछा कि तू कौन है और किस जगह रहती है? उसने कहा कि मैं "लज्जा" हुँ और मानव के नैन में बसेरा करती हुँ। तीसरी बार "प्रेम" आया तो उससे पूछा कि तू कौन है और कहाँ रहता है? उसने कहा कि मैं "प्रेम" हुँ और मनुष्य के ह्रदय में रहता हुँ। चौथी बार "भाग्य" आया तो उससे पूछा कि तू कौन है और ठिकाना कहाँ है? उसने कहा कि मैं भाग्य हुँ और इन्सान के सर में रहता हुँ। हकीम लुक्मान ने कहा कि वहाँ तो बुद्धि रहती है, उसने उत्तर दिया कि जब "भाग्य" आता है तो "बुद्धि" विदा हो जाती है। पाँचवीं बार "इश्क" आया, पूछा कि तू कौन है और तेरा बसेरा कहाँ है? उसने कहा कि मैं "इश्क" हुँ और इन्सान की आँख में रहता हुँ। हकीम लुक्मान ने कहा कि आँख में तो "शर्म" रहती है, उसने कहा जब इश्क आता है तो शर्म जाती रहती है। छटी बार "लालच" आया तो पूछा तू कौन है और किस स्थान पर रहता है? उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम "लालच" है और मनुष्य के ह्रदय में मेरा ठिकाना है, हकीम लुक्मान ने कहा कि ह्रदय में तो प्रेम रहता है, उत्तर मिला जब लालच दिल में आ जाता है तो "प्रेम" रवाना हो जाता है।

❑❑

आशे जौ

आशे जौ बनाने की तरकीब यह है कि अच्छी क़िस्म के मोटे जौ लेकर पानी में पांच–छः घन्टे भिगो रख्खें, जब वह फुल जाएं तो उन को ओखंली में कुट कर उनका छिलका उतार कर के रख लें, जब ज़रूरत हो एक छाटांक जौ लेकर फिर एक सेर पानी में हलकी आच पर पकाएं, यहां तक कि पानी पाव सेर रह जाए, अब उस पानी को छान लें और उसमें थोड़ी चीनी मिला कर ठन्डा कर के पिलाएं, उसको मज़ेदार बनाने के लिए उस में थोड़ा लेमों का रस डाल सकते हैं, मिठास के बदले हलका नमक और पिसी हुई काली मिरच भी उसमें डाल सकते हैं।

आशे जौ बीमारों और बच्चों के लिये बहुत मूफ़ीद है इस को ताज़ा बताज़ा तय्यार कर के देना चाहिए, लेकिन आसानी के लिए सूबह का तय्यार किया हुआ आशे जौ शाम को भी पिलाया जा सकता है। अगर गर्मी का मौसम हो तो आशे जौ के बरतन को ठन्डे पानी में रखा जाए।

❑❑

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुगल काल

पिछले अंक से आगे.....

— इदारा

अकबर की राजपूत नीति

राजपूतों के साथ अकबर ने उस नीति का अनुसरण नहीं किया जिसका उसने अफगानों के साथ किया था। अफगानों के साथ उसने विजय तथा उन्मूलन की नीति का अवलम्बन किया था। परन्तु राजपूतों के साथ उसने उदारता, सहिष्णुता, सद्भावना तथा सहयोग की नीति को अपनाया, क्योंकि डॉ0 ईश्वरी प्रसाद के शब्दों में "बिना राजपूतों के भारतीय साम्राज्य सम्भव न था और बिना उनके विवेकपूर्ण तथा सक्रिय सहयोग के सामाजिक तथा राजनीतिक एकता स्थापित नहीं हो सकती थी। नई राज–संस्था हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों को मिलाकर बनानी थी और दोनों ही का कल्याण करना था।" इस उदार नीति के अनुसारण करने के निम्नलिखित कारण थे :

1. अलोकप्रियता का निवारण

मुगल भारत में बड़े ही अलोकप्रिय थे। वह भारतवर्ष में बर्बर तथा विदेशी समझे जाते थे। बाबर अपनी अकाल–मृत्यु के कारण और हुमायूँ अपने संघर्षमय जीवन के कारण इस अलोकप्रियता को दूर न कर सका था। अकबर अपने पूर्वजों के इस असम्पन कार्य को सम्पन हृदयमें घर बनाकर उनका वास्तविक सम्राट् बनना चाहता था, जिससे वे भयवश नहीं वरन् प्रेम तथा श्रद्धा से उसे अपना शासक स्वीकार कर लें। चूंकि अकबर ने अफगानों से अपने पूर्वजों के राज्य को छीना था, अतएव अफगानों का घाव बड़ा ताजा था और इतनी जल्दी उनके हृदय पर विजय प्राप्त करना सम्भव न था, परन्तु राजपूतों का घाव पुराना हो चुका था। चूंकि अकबर का जन्म एक राजपूत के संरक्षण तथा राजभवन में हुआ था, अतएव अकबर राजपूतों की और सहृदयतापूर्वक आकृष्ट था और उनके साथ उदारता का व्यवहार करके अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहता था। अपने उदार स्वभाव तथा अपने उदार शिक्षकों के प्रभाव के कारण भी अकबर हिन्दुओं और विशेषकर राजपूतों के साथ उदारता का व्यवहार करने के लिये उद्यत था।

2. राजपूतों के अलौकिक गुणों का आकर्षण

अकबर राजपूतों के अलौकिक गुणों के कारण भी उनकी ओर आकृष्ट हुआ था और उन्हें अपना मित्र बनाने के लिये उत्सुक था। यह राजपूतों की वीरता तथा सहास से परिचित था। वह जानता था कि राजपूत अपने वचन का पक्का होता है और कभी विश्वासघात नहीं करता। अकबर को इस ओर जाति की सहायता की बड़ी आवश्यकता थी, अतएव उसने राजपूतों से मैत्री करने का निश्चय कर लिया।

3. सैनिक आवश्यकता की पूर्ति

अकबर को अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिये एक विशाल सेना की आवश्यकता थी। अभाग्यवश उसे अपने पूर्वजों के प्रदेश से सैनिक–सहायता प्राप्त होने की आशा न थी वरन् उस ओर से संकट की ही संभावना बनी रहती थी। अतएव भारत में योग्य तथा कुशल सैनिक प्राप्त करने का स्थान राजस्थान था। राजपूतों को अपनी सेना में भर्ती करके अकबर अपनी शक्ति में वृद्धि कर सकता था।

4. राजपूताने का भौगोलिक महत्त्व

राजपूताने की महत्त्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति से भी प्रभावित होकर अकबर ने राजपूतों को अपना मित्र बनाने का निश्चय किया था। राजपूताना दिल्ली तथा आगरे के अत्यन्त सनिकट स्थित था। अतएव राजपूत कभी भी मुगल–साम्राज्य तथा उसकी राजधानी के लिये खतरनाक सिद्ध हो सकते थे। ऐसी सिथति में अकबर के लिये दो मार्ग थे – या तो वह उनके हृदय पर विजय प्राप्त कर के उन्हें अपना मित्र बना लेता या उनसे युद्ध करके उन्हें उन्मूलित कर देता। अकबर

यह जानता था कि राजपूतों को उन्मूलित करना सम्भव न था और यदि वह उनके साथ उलझ जाता तो उसकी दक्षिण–विजय की तथा अन्य योजनाएं सफल न हो पातीं। अतएव उसने पहला मार्ग ही ग्रहण किया और राजपूतों को प्रेमपाश में बाँध कर उनकी सहायता से अपने उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयत्न किया।

5. साम्राज्य की सुरक्षा तथा दायित्व में सहयोग

अकबर बड़ा ही दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था। वह जानता था कि बहुसंख्यक हिन्दुओं और विशेषकर राजपूतों की वीर जाति की सद्भावना तथा सहायता के बिना न तो उसका साम्राज्य सुरक्षित रहेगा और न उसे स्थायित्व प्राप्त होगा। अपने साम्राज्य की नींव को सुदृढ़ बनाने के लिये जनमत का समर्थन प्राप्त करना आवश्यक था। चूंकि राजपूत लोग हिन्दू जाति के नेता थे, अतएव उनकी सद्भावना तथा सहयोग प्राप्त करने का तात्पर्य सम्पूर्ण हिन्दू–जाति का समर्थन तथा सहयोग प्राप्त करना था। अतएव अकबर ने राजपूतों के साथ उदारता का व्यवहार कर उनके हृदय पर विजय प्राप्त करने तथा साम्राज्य–निर्माण में उनकी सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

6. साम्राज्य विस्तार में सहायता

न केवल साम्राज्य को सुरक्षित रखने तथा उनकी नींव को सृदृढ़ बनाने में वरन् साम्राज्य–विस्तार के कार्य में भी राजपूतों की बहुत बड़ी उपयोगिता थी। अकबर ने केवल मुसलमान राज्यों के वरन् स्वतन्त्रता प्रेमी राजपूत–राज्यों के भी विध्वंस करने में अपने मित्र राजपूत राज्यों की सहायता ले सकता था। राजपूतों को राजपूतों की ही तलवार से विनष्ट करने की भावना से प्रेरित होकर भी सम्भवतः अकबर ने राजपूतों को मित्र बनाने का प्रयत्न किया।

7. अमीरों पर नियन्त्रण रखने में सुविधा

अकबर को अपने अमीरों पर विश्वास न था, क्योंकि वे प्रायः विद्रोह कर देते थे और साम्राज्य में उपद्रव खड़ा कर देते थे। प्रायः यह विद्रोही अमीर सम्राट् के शत्रुओं से मिल जाते थे और उनकी शक्ति को प्रबल बना देते थे। ऐसी स्थिति में अकबर को ऐसे अमीरों की आवश्यकता थी, जिनकी स्वामिभक्ति अटल हो और जिनकी सहायता से सम्राट् इन विश्वासघाती तथा विद्रोही अमीरों पर नियन्त्रण रख सके और उनका दमन कर सके। सम्राट् की इस आवश्यकता की पूर्ति राजपूतों की वीर, विश्वसनीय तथा सभिमानो जाति ही कर सकती थी; अतएव अकबर ने राजपूत अमीरों का एक प्रबल दल बनाने का निश्चय कर लिया।

8. सुलह–कुल की भावना की प्रेरणा

न केवल उपयोगिता के दृष्टिकोण से वरन् अपने उदार स्वभाव के कारण भी अकबर ने राजपूतों को अपना मित्र बनाने का निश्चय किया था। अकबर सुलह कुल की भावना से प्रेरित था। अतएव वह उदारता तथा धार्मिक सहिष्णुता की नीति का अनुसरण कर सभी को प्रसन्न रखना चाहता था।

डॉ0 बेनी प्रसाद ने अकबर की उपर्युक्त उदार नीति की प्रशँसा करते हुए लिखा है, "इसने भारतीय राजनीति में नव–युग का प्रादुर्भाव किया, इसने देश को प्रख्यात सम्राटों की एक पंक्ति प्रदान की; इसने मुगल सम्राटों की चार पीढ़ियों को मध्यकालीन भारत में महानतम योद्धाओं तथा कूटनीतिज्ञों को सेवाएं प्रदान कीं।"

राजपूत–नीति का क्रियात्मक स्वरूप

अकबर की राजपूत नीति के क्रियात्मक स्वरूप का अध्ययन करने पर उसके दो प्रधान उद्देश्यों का पता लग जाता है। उसका पहला उद्देश्य था मुगल साम्राज्य की शक्ति को बढ़ाना और राजपूतों की शक्ति को विच्छिन्न करना। उसका दूसरा उद्देश्य था अपने तथा अपनी जाति के गौरव को बढ़ाना और राजपूतों के प्राचीन गौरव को समाप्त करना।

अकबर ने राजपूतों को अपनी सेना में भरती किया और उन्हें सेना में बड़े ऊँचे–ऊँचे पद प्रदान किये। इससे अकबर को बड़ा लाभ हुआ। अपने साम्राज्य का विस्तार करने में अकबर को राजपूतों से बड़ी सहायता मिली। उसने न केवल मुसलमान–राज्यों के विरुद्ध वरन् अन्य राजपूत–राज्यों के विरुद्ध भी मित्र राजपूत–राज्यों का प्रयोग किया। उसने

राजपूतों की तलवार से ही राजपूतों का विनाश किया। यह अकबर की उच्च–कोटि की कूटनीतिज्ञता थी।

अकबर ने प्रशासकीय विभाग में भी राजपूतों को ऊँचे–ऊँचे पद प्रदान किये। उसने उन्हें प्रान्तों का शासक बनाया और केन्द्रीय सरकार में भी उसने उन्हें ऊँचे–ऊँचे पद दिये। उसने राजपूतों की प्रशासकीय प्रतिभा से पूरा लाभ उठाया और अपने साम्राज्य की नींव को सुदृढ़ बनाया।

अपने दरबार में भी अकबर ने राजपूतों को सम्मान्य–पद प्रदान किया और राजपूत अमीरों का उसने एक प्रबल दल बना लिया। यह दल सम्राट का बड़ा ही स्वामिभक्त बना रहा और मुसलमान अमीरों पर नियन्त्रण रखने में सम्राट् की बड़ी सहायता की। अपने षड्यन्त्रकारी तथा कुचक्री अमीरों के विरुद्ध सम्राट् राजपूतों का सफलतापूर्वक प्रयोग कर सकता था।

इस प्रकार राजपूतों ने मुगल–सेना में भर्ती होकर, प्रशासकीय विभाग में काम करके तथा मुगल–दरबार में सभासद का स्थान ग्रहण कर मुगल–साम्राज्य की सेवा की और मुगल सम्राज्य को सुदृढ़ बनाने में भरपूर सहयोग दिया।

अकबर बराबर विजय पर विजय प्राप्त करता रहा गुजरात, बिहार, बंगाल आदि पर काबिज हो गया। 1586 ई0 में कश्मीर को अपने राज्य में मिला लिया, इसी साल यूसुफजई पठानों का जोर तोड़ा इसी लड़ाई में अकबर का मशहूर मुसाहिब बीरबल मारा गया, 1590 ई0 में कंधार और सिन्ध को अपने राज्य में मिला लिया, 1595 ई0 में बरार और 1600 ई0 में खान्देस फत्ह किया, इस तरह अकबर के जमाने में हिन्दोस्तान की मुत्तहिदा हुकूमत (संयुक्त राज्य) दोबारा काइम हुई। अकबर 63 वर्ष की उम्र में 49 वर्ष राज कर के इन्तिकाल कर गया।

अकबर बड़ा ज़हीन, बहादुर और अपनी आदतों के लिहाज़ से बहुत ही एअतिदाल पसन्द (बीच की राह को प्रिय रखने वाला) बादशाह था। अपने उस्ताद मुल्ला पीर मुहम्मद और मुल्ला अब्दुल लतीफ से कुछ लिखना पढ़ना सीखा था, लेकिन अपनी जिहानत से मुशकिल से मुशकिल मुआमलात में सहीह राय रखता था। आखिर उम्र में उस के मजहबी खयालात बदल गये थे उसने खुद एक दीन "दीने इलाही" नाम से चलाया था। अल्लाह का शुक्र है कि इतना शाक्तिशाली और प्रतापी बादशाह उस ने अपना दीन किसी पर थोपा नहीं फिर भी उस के दरबारियों में गुमराही (पथ भ्रष्टता) आम थी, कुछ लोग सत्य पर जमे हुए भी थे।

अकबर का मुल्की व जंगी निज़ाम (शासन तथा युद्ध व्यवस्था) इतना अच्छा था कि हिन्दोस्तान में कोई ऐसा न था जो उस की बराबरी का दअवा करता। बन्दोबस्त मालगुज़ारी के बेहतरीन कवानीन (अच्छे से अच्छे नियम) अगर्चि शेरशाह सूरी के ज़माने में बन गये थे, मगर ऐसे वसीअ (विस्तृत) मुल्क उन पर सहीह तौर पर अमल दरामद हकीकत में अकबर ही के जमाने में हुआ।

फौज में हर मजहब और हर नस्ल के आदमी थे, हिन्दुओं में जियादातर राजपूत थे। फौजी निजाम बहुत अच्छा था, सवारों का दस्ता, प्यादों (पैदल चलने वाले) का दस्ता, तीर चलाने वाले, तलवार चलाने वाले सब अलग–अलग होते। तोपखाने का अफसर मीर आतिश कहलाता। तन्खाहें सब को नक्द दी जाती थी।

राजपूत–नीति के परिणाम

अकबर की राजपूत–नीति के परिणाम बड़े ही व्यापक तथा महत्त्वपूर्ण थे। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा साँस्कृतिक, कोई ऐसा क्षेत्र न था जिस पर उसकी उदारता तथा सहिष्णुता की नीति का प्रभाव न पड़ा हो।

राजपूतों के मुगलों की सेना में भर्ती हो जाने तथा ऊँचे–ऊँचे पदों पर पहुँच जाने के कारण मुगल साम्राज्य की सैनिक शक्ति में बड़ी वृद्धि हुई। सैनिक शक्ति के प्रबल हो जाने से आन्तरिक विद्रोह के दमन करने तथा शान्ति एवं सूव्यवस्था के स्थापित करने में बड़ी सहायता मिली। सैनिक बल के बढ़ जाने से साम्राज्य विस्तार का कार्य भी बड़ा सरल हो गया और सम्पूर्ण उत्तर–भारत और दक्षिण का भी बहुत बड़ा भाग मुगल–सम्राट की अधीनता

में आ गया। राजपूतों तथा मुगलों की संयुक्त सेनाओं ने न केवल अफगानों वरन् स्वतन्त्र राजपूत राज्यों की भी शक्ति को विध्वंस कर दिया। राजपूतों के साहयोग ने मुगल साम्राज्य की नींव को सुदृढ़ तथा स्थायी बना दिया।

अकबर की उदार राजपूत–नीति का सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। हिन्दू तथा मुसलमान एक दूसरे के अत्यन्त निकट सम्पर्क में आ गये और उनमें सद्भावना आ गई। उनमें विचार–विनिमय बढ़ गया और वे एक–दूसरे को अपने विचारों से प्रभावित करने लगे। अकबर ने अनेक सामाजिक सुधार किये और हिन्दू–समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों के दूर करने का प्रयत्न किया। अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति का परिणाम यह हुआ कि हिन्दुओं को पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई और मुसलमान–राज्य की प्रजा होने के कारण उन्हें शताब्दियों से जिन असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा था, उनका अन्त हो गया। उनके मन्दिरों तथा मूर्तियों का तुड़वाया जाना बन्द हो गया और उन्हें नये मन्दिर बनवाने की स्वतन्त्रता मिल गई। जिजिया तथा अन्य प्रकार के अनुचित करों से हिन्दुओं को मुक्ति मिल गई। चूंकि सरकारी नौकरियों का द्वार हिन्दुओं के लिये खुल गया, अतएव अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का उन्हें पूरा अवसर प्राप्त हो गया।

अकबर की उदार–नीति का भारतीयों के आर्थिक जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने मिलकर जिस साम्राज्य का निर्माण किया, उसमें शान्ति तथा सुव्यवस्था का स्थापित हो जाना तथा उसका धन–धान्य पूर्ण हो जाना स्वाभाविक था। राजा टोडरमल ने भूमि का जो सुधार किया, उससे सरकार तथा प्रजा दोनों का अधिक कल्याण हुआ।

अकबर की उदार नीति का साँस्कृतिक क्षेत्र में भी बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। राजपूतों के मुगल दरबार में सभासद बन जाने से हिन्दू उत्सवों तथा त्योहारों और उनके आचार–व्यवहारों तथा रीति–रिवाजों का मुगल–दरबार में प्रवेश हो गया। अकबर ने हिन्दी तथा संस्कृत को अपना प्रश्रय प्रदान किया और हिन्दू भी फारसी का अध्ययन करने लगे। हिन्दुओं तथा मुसलमानों की मिश्रित शैली की छाप मुगलकालीन कला पर स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

अकबर ने राजपूतों के साथ जिस नीति का अनुसरण किया, उससे उसकी दूरदर्शिता तथा कूटनीतिज्ञता का परिचय मिलता है। उसने मुसलमानों तथा हिन्दूओं दोनों ही के विरुद्ध राजपूतों को बड़ी सफलतापूर्वक प्रयोग किया। अपने विरुद्ध उसने अफगानों तथा राजपूतों का संयुक्त मोर्चा न बनने दिया। यह उसकी बहुत बड़ी सफलता थी।

❑❑

मलबे से ग्यारह दिन बाद जीवित निकला

हैती में भूकंप में धराशायी हुई इमारतों के मलबे से 11 दिन बाद जीवित निकाले गये 25 वर्षीय एक युवक ने कहा है कि वह इतने दिनों से कोका कोला पी कर और स्नैक्स खाकर ज़िन्दा रहा है। वह एक पंसारी की दुकान के मलबे में दबा था। भूकंप पीड़ित युवक विसमोंड एक्जांटस ने बताया, मैं अच्छा महसूस कर रहा हूँ। अन्तर्राष्ट्रीय राहत और बचाव दलों ने उसे 11 दिन बाद मलबे से जीवित निकाला है। क्रियोल में उसने कहा, मैं कोका कोला पीकर जीवित रहा हूँ। मैं रोज़ कोका कोला पीता था। मैं छोटी–मोटी चीजें खाता भी था। वह 'नोपोलिटन' दुकान में काम करता था और भूकंप के कारण वह उसके मलबे में दब गया था।

उसने कहा, मैंने भूकंप का झटका महसूस किया और उसके बाद मैं बेहोश हो गया। जब मैं उठा तो मैंने अपने साथ काम करने वाले को आवाज़ लगायी। उसने खुद को मलबे के बीच एक छोटे ख़ाली स्थान में फंसा पाया। वह थोड़ा बाएं और थोड़ा दाएं होने के लायक था। उसने राहगीरों को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश की लेकिन वह इसमें असफल रहा। उसने एक फ्रेंच अस्पताल में कहा, मैं चिल्लाया नहीं।

❑❑

किस्त 22

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
ख़ुमार	उन्माद	ख़्वाबीदा	निद्रित	ख़ौद	शिरस्त्राण
ख़ुमार आलूद	उन्मत्त	ख़्वाजा	स्वामी	ख़ुदइरादीयत	स्वाधिकार
ख़मदार	टेढ़ा	ख़्वार	अपमानित	ख़ुद एअतिमादी	आत्म विश्वास
ख़मीदा	टेढ़ा	ख़्वारी	अपमान	ख़ुद बख़ुद	स्वतः
ख़मीर	प्रकृति	ख़्वास्तगार	इच्छुक	ख़ुदबीं	अहंकारी
ख़मीर	गुंधा खट्टा आटा	ख़वास	विशिष्ट गण	ख़ुद पसन्द	स्वेच्छा धारी
ख़ंजर	कटार	ख़वास	गुण	ख़ुद्दार	स्वाभिमानी
ख़न्दां	हार्षत	ख़्वान्दगी	वाचन	ख़ुद्दारी	स्वाभिमान
ख़न्दक	खाई	ख़्वान्दः	शिक्षित	ख़ुद रफ़्तार	अचेत
ख़न्दः	हंसी	ख़्वाहां	इच्छुक	ख़ुद साख़ता	स्वरचित
ख़िन्ज़ीर	सुअर	ख़्वाहर	बहन	ख़ुदसिताई	आत्म प्रशंसा
ख़ुन्सुर	कनिष्टा	ख़्वाहिश	इच्छा	ख़ुद सर	उद्दन्ड
ख़ुन्सुर	छंगलिया	ख़्वाहिश मन्द	इच्छुक	ख़ुद गरज़	स्वार्थी
ख़ुनुक	शीतल	ख़्वाहिशे नफ़्सानी	काम वासना	ख़ुद ग़रज़ी	स्वार्थ परता
ख़ुन्की	ढन्डक	ख़्वाह मख़्वाह	अनायास	ख़ुद फ़रामोशी	आत्म विस्मृत
ख़ू	स्वभाव	ख़ूब	अच्छा	ख़ुद कुशी	आत्महत्या
ख़्वाब	निद्रा	ख़ूबरू	सुन्दर	ख़ुद कफील	स्वाश्रित
ख़्वाब	स्वप्न	ख़ूबी	गुण	ख़ुद मुख़तार	स्वाधीन
ख़्वाब आलूद	निद्रित	ख़ुद	स्वयं	ख़ुदमुख़तारी	स्वाधीनता
ख़्वाब गाह	शयन कक्ष	ख़ौद	लोहे का टोपा	ख़ुद नुमाई	आत्म प्रदर्शन

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

तालिबान को अमेरिका की चुनौती कबूल

कंधार! तालिबान ने धमकी दी है कि वह अफगानिस्तान में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के आदेश पर भेजे जाने वाले 30,000 अमेरिकी सैनिकों से लड़ेगा और अपना प्रतिरोध बढ़ाएगा। तालिबान प्रवक्ता कारी यूसुफ अहमदी ने अज्ञात स्थान से फोन पर कहा, 'ओबामा अफगानिसतान से अमेरिका जाते कई ताबूत देखेंगे। अफगानिस्तान को सैन्य तरीकों से नियंत्रित करने की उनकी उम्मीदें पूरी नहीं होंगी। अफगानिस्तान आने वाले 30,000 अतिरिक्त सैनिक कड़े प्रतिरोध और संघर्ष को भड़काएंगे।'

अफगानिस्तान में 30 हजार और सैनिक

वाशिंगठन! अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अफगानिस्तान में 30,000 और सैनिक भेजने के बहुप्रतीक्षित फैसले की घोषणा करते हुए वादा किया कि इनकी वापसी 18 महीने में शुरू हो जाएगी। इससे युद्ध के खिलाफ बढ़ते जनअसंतोष को दूर किया जा सकेगा। सैनिकों 2010 की गर्मियों तक अफगानिस्तान पहुँच जाएंगे। इससे अफगानिस्तान में अमेरिकी सैनिकों की संख्या 97,800 हो जाएगी।

ओबामा ने कहा, 'यदि मैं यह नहीं सोचता कि अमेरिका और अमेरिकी जनता की सुरक्षा अफगानिस्तान में दाँव पर है तो मैं खुशी से हर सैनिक को कल घर वापस आने का आदेश देता।' दो महीने के विचार–विमर्श के बाद ओबामा ने न्यूयार्क में वेस्ट प्वाइंट स्थित अमेरिकी सैन्य अकादमी में एक भाषण में अफगानिस्तान में नई अमेरिकी रणनीति की रूपरेखा पेश की।

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने पाक–अफगान सीमा को आतंकवादियों का 'गढ़' करार दिया है। उन्होंने कहा कि परमाणु शक्ति संपन्न पाकिस्तान में नाभिकीय हथियार आतंकवादियों के हाथ लगने का खतरा है। इसके लिए पाक को सतर्क रहना चाहिए। ओबामा ने अपनी अफगान–पाक नीति का खुलासा करते हुए कहा कि अफगानिस्तान और पाकिस्तान में हमारी सुरक्षा दाँव पर है। उन्होंने आगाह किया कि अफगानिस्तान अलकायदा के हिंसक उग्रवाद का केंद्र बिंदु है। यहीं से हम पर 9/11 हमला हुआ और यहीं से नए हमलों की साजिश रची जाती है। उधर अफगानिस्तान सरकार ने अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की उस रणनीति का स्वागत किया है जिसके तहत युद्ध–ग्रस्त देश में जंग तुरंत खत्म करने के लिये 30,000 अतिरिक्त सैनिक भेजने के आदेश जारी किए गए हैं।

1.50 रुपए कटोरी दाल पिएंगे, महंगाई की बात करेंगे

साँसदों को मिलता हे चौथाई कीमत पर खाना

– डॉ0 मुईद अशरफ नदवी

नई दिल्ली! बेलाहाशा बढ़ती महंगाई में 12.50 रुपए में शाकहारी थाली! और 1.50 रुपए में एक कटोरी दाल! मौजूदा दौर में आम आदमी के लिए यह सिर्फ कल्पनालोक की बातें हैं लेकिन संसद भवन की कैंटीन में यह संभव है। महंगाई के खिलाफ हम जिन साँसदों को सदन में चीखते–चिलाते देखते हैं वह असल में कम दाम में बेहतर स्वाद की सुविधा उठा रहे होते हैं।

सरकार इन साँसदों के खाने–पीने का इतना ज्यादा ख्याल रखती है कि संसद की कैंटीन में खाने की कीमतें बाजार से लगभग चौथाई हैं। सब्सिडी की बदौलत मिल रहे सस्ते खाने की इस सुविधा का लाभ संसद के कर्मचारी सुरक्षाकर्मी और मान्यता प्राप्त पत्रकार भी उठाते हैं। अंतिम बार संसद भवन में खाने की कीमतों की समीक्षा वर्ष 2004 में की गई थी। संसद भवन में कई भोजन इकाईयों का संचालन भारतीय रेलवे के हाथ है।

साँसद जी खा रहे हैं – और आम आदमी पा रहा है

शाकाहारी थाली	12.50	–	30
माँसाहारी थाली	22	–	100
दही चावल	11	–	40
वेज पुलाव	8	–	30
चिकन बिरयानी	34	–	40
फिश करी, चावल	13	–	80
राज़मा चावल	7	–	30
चिकन करी	20.50	–	45
चिकन मसाला	24.50	–	120
बटर चिकन	27	–	140
खीर	5.50	–	60